विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 4

महाबलीपुरम् के स्मारक
वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर
पट्टदकल के मंदिर
हम्पी के स्मारक

Mahabalipuram Monuments
Brihadesvara Temple, Thanjavur
Pattadakal Temples
Hampi Monuments

WORLD CULTURAL HERITAGE SITES - INDIA 4

Booklet

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

1972 में यूनेस्को की आम सभा ने ''विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा'' से संबंधित सभा पारित की। इस सभा का उद्देश्य विश्व की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु विश्व के विभिन्न देशों एवं उनके निवासियों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा देना था, ताकि वे इस दिशा में अपना योगदान दे सकें। बहुत से देशों ने इस सभा को समर्थन दे कर अपने-अपने देश की सीमाओं में स्थित विशिष्ट सार्वभौमिक महत्व के स्थानों एवं स्मारकों का संरक्षण करने की शपथ ली। सभा ने इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का रचना-विधान तथा विश्व धरोहर-समिति गठित की।

इस सभा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह भी थी कि इसने विश्व-धरोहर-कोष स्थापित किया, जिससे कि विश्व धरोहर में सूचीबद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहायता ली जा सके। इस कोष में विभिन्न स्रोतों से आर्थिक सहायता मिलती रहती है, जिसे संरक्षण की योजनाओं पर, स्मारकों तथा स्थानों को यथावत् बनाए रखने के कार्यों पर खर्च किया जाता है।

विश्व धरोहर समिति की वर्ष में एक बैठक होती है तथा इसके मुख्य दो कार्य हैं–

- विश्व-धरोहर को पहचानना, अर्थात् उन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थानों का चुनाव करना, जो इसके अंग होंगे। इकोमोस (इंटरनेशनल काउन्सिल ऑफ मोन्यूमेंट्स ऐण्ड साइट्स) तथा इयूकन (इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजरवेशन ऑफ नेचर ऐण्ड नेचुरल रिसोर्सेज) विभिन्न देशों के प्रस्तावों की जांच-पड़ताल कर उनकी मूल्यांकन रिपोर्ट बनाकर समिति के कार्यों में सहायता करती है।
- विश्व-धरोहर-कोष को चलाने एवं विभिन्न देशों द्वारा मांगी गई तकनीकी एवं वित्तीय सहायता का निर्धारण करना।

यूनेस्को द्वारा भारत में चुने गए विश्व धरोहर स्थान इस प्रकार हैं–अजंता की गुफाएं; एलोरा की गुफाएं; आगरा का किला; ताज महल, आगरा; सूर्य मंदिर, कोणार्क; महाबलीपुरम् स्मारक समूह; चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स, गोआ; खजुराहो स्मारक-समूह; हम्पी के स्मारक; फतेहपुर सीकरी-मुगलकालीन शहर; पट्टदकल स्मारक समूह; एलिफेंटा की गुफाएं; वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, स्तूप-साँची; कुतुब स्मारक समूह तथा हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली का हमेशा यह प्रयास रहा है कि वह लोगों को ''भारतीय संस्कृति'' के बारे में शिक्षित करने के लिए मनमोहक व जानकारी देने वाली पठनीय सामग्री उपलब्ध कराए। ऐसी प्रकाशित सामग्री देश भर के उन स्कूलों में वितरित की जाती है, जहां के अध्यापकों को केन्द्र ने प्रशिक्षण दिया है। इनका उपयोग विभिन्न शैक्षणिक स्थितियों में भारतीय कलात्मक अनुभूति के अन्तः संबंध को समझाने के लिए किया जाता है। इनका उद्देश्य देश की युवा शक्ति को भारतीय कला एवं

World Cultural Heritage Sites–India

The General Council of UNESCO in 1972 adopted the "Convention concerning the Protection of the World Natural and Cultural Heritage". The aim of the Convention was to promote cooperation among all nations and people in order to contribute effectively to the protection of the natural and cultural heritage which belongs to all mankind. A large group of nations ratified the Convention and pledged to conserve the sites and monuments within its borders which have been recognised as having an exceptional universal value. To this end, the Convention established a mechanism of international cooperation and set up a World Heritage Committee.

Another important achievement of the Convention was the creation of the World Heritage Fund which allows it to call upon international support for the conservation of the natural and cultural sites listed as the World Heritage. The World Heritage Fund receives incomes from different sources which are used to finance conservation projects and upkeep of the monuments and sites.

The World Heritage Committee, which meets once a year, has two important tasks :

— to define the World Heritage, that is, to select the cultural and natural wonders that are to form part of it. The Committee is helped in this task by ICOMOS (International Council of Monuments and Sites) and IUCN (International Union for the Conservation of Nature and Natural Resources) which carefully examine the proposals of the different countries and draw up an evaluation report on each of them.

— to administer the "World Heritage Fund" and to determine the technical and financial aid to be allocated to the countries which have requested for it.

The World Heritage Sites selected by UNESCO in India are: Ajanta Caves; Ellora Caves; Agra Fort; Taj Mahal, Agra; The Sun Temple, Konarak; Mahabalipuram Group of Monuments; Churches and Convents, Goa; Khajuraho Group of Monuments; Hampi Monuments; Fatehpur Sikri-Mughal City; Group of Monuments at Pattadakal; Elephanta Caves; Brihadesvara Temple, Thanjavur, Stupas, Sanchi; Qutub Complex and Humayun's Tomb, Delhi.

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT)'s endeavour has been to produce informative and attractive educational material to teach about Indian Culture. These materials are distributed to schools in all parts of the country from where teachers have been trained by the CCRT. They are used in a variety of teaching situations to create an understanding of the inter-disciplinary approach in Indian artistic manifestations. They aim at sensitising the youth to the philosophy and aesthetics

संस्कृति में निहित दर्शनशास्त्र एवं सौंदर्य के प्रति संवेदनशील बनाना है।

प्रायः छात्रों को संग्रहालयों एवं ऐतिहासिक स्मारकों की शैक्षणिक यात्रा पर जा कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सांस्कृतिक केन्द्र इस पठनीय सामग्री के द्वारा स्कूल की चारदीवारी के अंदर ही छात्रों को भारतीय विचारधारा तथा कला के वैभव व सौंदर्य का साक्षात् परिचय करवाता है।

केन्द्र द्वारा तैयार की गई दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के अतिरिक्त इसकी मुद्रित सामग्री की भी देश भर के अध्यापकों ने काफी प्रशंसा की है। अपने बीच लोकप्रिय इस मुद्रित सामग्री की सहायता से वे छात्रों में हमारी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करते हैं।

भारत में विश्व धरोहर सप्ताह मनाने के लिए सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र देश में स्थित विश्व धरोहर के 16 स्थानों पर चार सांस्कृतिक पैकेज भेंट कर रहा है। इनमें से हर पैकेज में 24 रंगीन चित्र हैं। हर चित्र के पीछे उसकी व्यापक जानकारी है। इनके साथ एक पुस्तिका भी है, जिसमें छात्रों एवं अध्यापकों की जानकारी के लिए हर स्मारक का वर्णन तथा संबंधित गतिविधियों का उल्लेख है। यद्यपि इन पैकेजों के 96 रंगीन चित्र इन स्थानों की भव्यता को साकार करने में पूरी तरह सक्षम तो नहीं होंगे, फिर भी एक सीमा तक पुस्तिका छात्रों एवं अध्यापकों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दे सकेगी।

स्कूल चाहें तो दल या क्लब बनाकर या फिर अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण स्थानों के बारे में व्यापक खोजबीन कर सकते हैं तथा छात्रों को संरक्षण के आसान तरीके सिखा सकते हैं।

सारे देश में फैले हजारों से ज्यादा पुरातन स्मारकों में से कुछ का संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं, धर्मार्थ न्यास तथा कुछ व्यक्ति कर रहे हैं। यह एक बहुत गर्व की बात है कि यूनेस्को ने भारत के 16 स्मारकों को चुनकर विश्व की धरोहर-सूची में शामिल किया है। यद्यपि देश के बहुसंख्यक स्मारकों को देखते हुए यह संख्या काफी छोटी है, फिर भी इससे उस काल के कलाकारों एवं वास्तुविदों का सम्मान बढ़ा है जिन्होंने 2000 वर्षों की लंबी अवधि में इन स्मारकों को साकार किया था।

inherent in Indian art and culture. Students do not always get a chance to visit museums and historical monuments to get a first-hand experience of learning about our cultural heritage; hence, the materials of the CCRT bring to the students, in the confinement of the four walls of the classroom, the splendour and beauty in Indian thought and art.

Apart from other audio-visual materials prepared by the CCRT its Folios and Cultural Packages have received wide acclaim and are very popular with teachers in all parts of the country, who are using them to create amongst students a sense of responsibility for conservation of all that is beautiful in our natural and cultural heritage.

To celebrate the World Heritage Week in India the CCRT is presenting four Cultural Packages on the 16 World Heritage Sites in India. These packages contain about 24 pictures each with detailed descriptions of each picture alongwith a booklet giving information about each monument and related activities for students and teachers. The 96 pictures contained in these packages are not adequate to recreate the splendour of these sites. However, within the given constraints, it is hoped that inspired by the activities provided in the booklet, teachers and students will collect more information about their cultural heritage and interweave it into the curriculum subjects that they teach and learn. Schools can also form groups, clubs and work with other voluntary organisations to systematically take up the work of conducting detailed studies of the sites and encourage the youth to learn simple conservation techniques.

Of the thousands of ancient monuments strewn all over the countryside in India, some are protected by the Archaeological Survey of India, a few by voluntary organizations and endowment trusts and some by members of the community at large. It is a matter of great pride that UNESCO has selected 16 monuments of India and placed them on the World Heritage list. Though this number is small in comparison to the large number of monuments in the country, it brings prestige to the artists and architects of India of that bygone era, who made these monuments in a period covering a span of 2000 years.

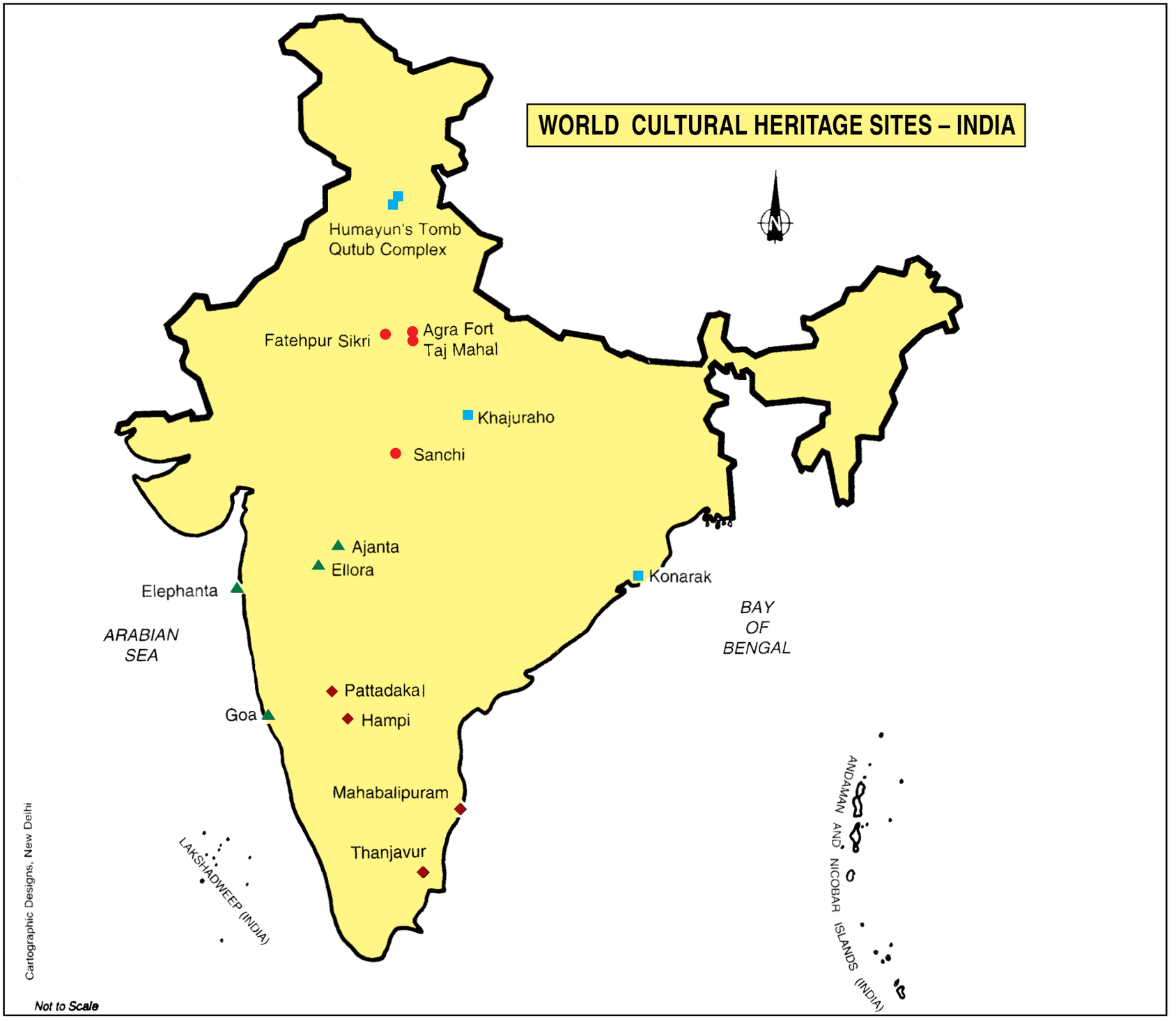

World Cultural Heritage Sites —India 1
Sanchi Stupas, Agra Fort;
Fatehpur Sikri; Taj Mahal, Agra

World Cultural Heritage Sites —India 2
Sun Temple, Konarak; Khajuraho Temples;
Qutub Complex, Humayun's Tomb, Delhi

World Cultural Heritage Sites —India 3
Ajanta Caves; Ellora Caves; Elephanta Caves;
Churches and Convents, Goa

World Cultural Heritage Sites —India 4
Mahabalipuram Monuments; Brihadesvara Temple,
Thanjavur; Pattadakal Temples; Hampi Monuments

महाबलीपुरम्

सातवीं शताब्दीं में जब उत्तरी भारत पर कन्नौज के हर्षवर्धन का शासन था, तो उस से कहीं पहले देश के दक्षिणी छोर पर पल्लव वंश का प्रभुत्व था। वह छठी से नौवीं शताब्दी के मध्य का काल था। कांचीपुरम उन के साम्राज्य की राजधानी थी तथा महाबलीपुरम् समुद्री बंदरगाह। इन दोनों स्थानों पर मंदिरों की दक्षिण भारतीय वास्तुकला के विकास का अध्ययन किया जा सकता है कि किस प्रकार सर्वप्रथम एक-कक्षीय भवनों का निर्माण हुआ तथा तत्पश्चात् किसी प्रकार यह वास्तुकला इतनी विकसित हुई कि एक पूरे शहर की सीमाओं को छू लिया।

महाबलीपुरम् शहर बंगाल की खाड़ी के समानान्तर स्थित है।

प्राचीन काल से ही यह एक प्रसिद्ध बंदरगाह था। इस तथ्य की पुष्टि पहली शताब्दी के एक अनाम यूनानी नाविक द्वारा लिखे गए वृत्तांत से होती है। दूसरी शताब्दी के ही एक अन्य यूनानी भूगोलविद् टॉलमी ने वर्तमान महाबलीपुरम् का उल्लेख किया है।

पल्लवों के एक अत्यंत प्रसिद्ध एवं कुशल शासक मामल्ल के नाम पर इसे मामल्लपुरम् भी कहा जाता था।

महाबलीपुरम् चेन्नइ से 55 किलोमीटर दूर है। चेन्नइ से इसके तटीय मार्ग पर नारियल तथा ताड़ के वृक्षों की पंक्तियां हैं। चेन्नइ से महाबलीपुरम् की इस यात्रा के दौरान समुद्र का विस्तृत दृश्य यात्रा को सुखद एवं आनंददायी बना देता है।

दक्षिण भारतीय पाषाण-वास्तुकला की कथा का प्रारंभ मामल्लपुरम से माना जाता है। यहां उपलब्ध वास्तुकला की तीन शैलियों का संबंध महेंद्र वर्मन (प्रथम), उनके बेटे नरसिंह वर्मन तथा राजसिंह (नरसिंह वर्मन, द्वितीय) के शासन-कालों से है।

महेंद्र वर्मन-शैली प्रारंभिक होने के साथ-साथ सीधी एवं सरल है, जिसे चट्टानों को तराशकर बनाए गए मंदिरों में देखा जा सकता है। नरसिंह वर्मन या मामल्ल शैली में निर्मित गुफा मंदिरों के स्तंभ सलोने तथा अलंकृत हैं और ये बैठे हुए शेरों पर आधारित हैं। राजसिंह काल में ग्रेनाइट के शिला-खंडों से मंदिरों का निर्माण किया गया था। इस काल में निर्मित मंदिरों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें शिवलिंग के पीछे सोमस्कंद अर्थात् भगवान शिव तथा पार्वती के साथ उनके पुत्र स्कंद को दर्शाया गया है।

इस कलात्मक विकास में भक्ति-पंथ ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेषकर, तमिल वैष्णव संत आलवार कवियों तथा शैव-पंथी नायनमारों ने इस क्षेत्र की कला एवं मंदिर-वास्तुकला को काफी प्रभावित किया।

मामल्लपुरम की प्रत्येक गुफा स्वयं में अनूठी है। मूर्त-उभार, पंच पांडव रथ, तटीय मंदिर आदि पल्लवकालीन वास्तुकला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

Mahabalipuram

The Pallavas were ruling in the far south, prior to the rule of Harshavardhana of Kannauj who reigned in northern India in the seventh century A.D. The Pallavas ruled over a large region of south India from the sixth to ninth century A.D. The capital of their empire was at Kanchipuram and the sea-port at Mahabalipuram. In both these places, it is possible to study the evolution of the south Indian style of temple architecture beginning from a small one roomed building till it grew so large that its wall encompassed a whole township.

The city of Mahabalipuram runs parallel to the Bay of Bengal. The area was a famous port from ancient times and this fact was established when an anonymous Greek navigator of the first century A.D. who wrote a periplus of the Erythrean sea, makes mention about this area. The Greek geographer, of the second century A.D., Ptolemy also wrote about present day Mahabalipuram.

It is also known as Mamallapuram (the city of Mamalla) named after the great Pallava ruler Mamalla.

Mahabalipuram is just 55 kilometres from Chennai and the coastal route from Chennai is lined with coconut and palm trees. The panoramic view of the sea adds to the beauty of the road journey from Chennai to Mahabalipuram.

The story of south Indian stone architecture begins at Mamallapuram. The three major styles of architecture at Mamallapuram are of the time of 1) Mahendravarman 1, 2) his son Narasimhavarman and 3) Rajasimha (Narasimhavarman II).

The Mahendravarman style is the earliest and the simplest found in the rock-cut temples. In the cave temples of Narasimhavarman or the Mamalla style, the pillars are slender, ornamented and are supported by squatting lions. In the Rajasimha period, temples were constructed by blocks of granite stone. The representation of Somaskanda-Siva and Parvati with their son, Skanda, behind the Sivalinga became a regular feature of the Rajasimha period.

The *bhakti* cult must have also played a major role in artistic development. In particular, the Alvars, a group of Tamil Vaisnavite poet-saints and Saivite Nayanmars, influenced the art and temple architecture of the period.

Each of the caves at Mamallapuram is unique. The sculptural reliefs, the *panch* Pandava Rathas, the Shore temple are the important landmarks of artistic achievements of the Pallavan rule.

वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर

तंजावूर तमिलनाडु राज्य की राजधानी चेन्नइ की दक्षिणी-पश्चिमी दिशा में वहां से कोई 322 किलोमीटर दूर स्थित है। यह जिला मुख्यालय भी है।

नौंवी शताब्दी से तमिलनाडु के पूर्वी तट पर चोल शासकों ने शासन किया था। कोरोमंडल तट का नाम भी चोल मंडल (चोल क्षेत्र) से ही विकसित हुआ है। नौवीं शताब्दी के मध्य में पल्लवों को पराजित कर चोल शासक दक्षिण में काफी दूरी तक अत्यंत शक्तिशाली हो गए थे। चोल वंश, राजराजा (प्रथम) तथा उसके पुत्र एवं उन के उत्तराधिकारियों के शासन काल में चरमोत्कर्ष पर पहुंचा था। ये सभी शासक अत्यंत महत्वाकांक्षी थे। राजराजा (प्रथम) ने तो चोल साम्राज्य की सीमाओं का उड़ीसा राज्य तक विस्तार कर दिया था। साथ ही उसने श्री लंका को भी अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया था।

नौवीं शताब्दी में चोल वंश के सबसे पहले शासक के काल में तंजावूर को प्रसिद्धि मिली थी। इसी दौरान इस नगर को चोल साम्राज्य की राजधानी बनाया गया था। चोल-काल में निर्मित भवनों को राजराजा (प्रथम) के नाम पर राजराजेश्वर उड्यार नाम दिया गया था। यदि आकार मात्र को कला का मानक माना जाए तो वृहदेश्वर का मंदिर बारहवीं शताब्दी से पहले बने भवनों में अपना एक विशेष स्थान रखता है। मंदिर के चबूतरे पर उत्कीर्ण एक लेख से ज्ञात होता है कि राजराजा (प्रथम) ने मंदिर के विमान पर स्थापित करने के लिए एक स्तूपिका भेंट की थी। इस मंदिर की वास्तुकला की विशेषताएं, जैसे कि इसका आकार एवं अलंकरण कला, स्वयं में अद्भुत हैं। इन्हीं विशिष्टताओं को राजराजा (प्रथम) के पुत्र राजेंद्र-प्रथम ने अपनाया था तथा इन्हीं के आधार पर उसने गंगईकोण्डचोलपुरम में महान् मंदिर को निर्मित करवाया था। इसे भी वृहदेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है।

इस मंदिर का विमान इसका भव्यतम अंग है। यह कई स्तरों वाला है तथा इसकी ऊंचाई लगभग साठ मीटर है। मुख्यत: यह मंदिर ग्रेनाइट के बड़े-बड़े शिलाखंडों से बनाया गया था। ये शिलाखंड बहुत ही दूर-दराज के क्षेत्रों से मंगवाए गए थे, क्योंकि ये इसके आस-पास के क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं हैं।

तेरहवीं शताब्दी में चोल साम्राज्य का पतन हो गया था। उसके परवर्ती चेर, पांड्य और नायक वंश के शासकों ने उनसे पूर्व निर्मित मंदिरों एवं भवनों का विस्तार किया।

Brihadesvara Temple, Thanjavur

Thanjavur, the headquarters of the district of that name lies about 322 kilometres to the south-west of Chennai, the capital of Tamil Nadu state.

The Cholas had ruled as chieftains along the east coast of Tamil Nadu since the ninth century A.D. The name of the Coromandel coast is derived from *Chola Mandala* (Chola territory). The Cholas, who defeated the Pallava kings towards the middle of the ninth century A.D. had become very powerful in the far south. The Chola power reached its height under Rajaraja I and his son and successor Rajendra, both of whom were ambitious and aggressive kings. Rajaraja I extended the Chola territory upto the borders of Orissa and even brought Sri Lanka under his control.

Thanjavur attained prominence from the great ruler of the Chola dynasty in the middle of the ninth century A.D. when the city was made the capital of the Chola dynasty. The masterpiece of Chola architecture is the enormous Brihadesvara temple at Thanjavur built by Rajaraja I The temple is dedicated to Siva, who was named Rajarajesvaram-udayar after Rajaraja I. Even if size alone is considered as the criteria for quality of art there is no doubt that the Brihadesvara temple would stand along the foremost architectural creations produced in the world prior to the twelfth century. The inscriptions on the plinth of the temple disclose that a gold-covered finial was presented by Rajaraja I to be placed on top of the *vimana* of the temple. Many of the architectural features of the temple such as the size, the art of decoration are classified as innovations. Such features are also seen in constructions of Rajendra I which eventually paved the way for the great temple, also called Brihadesvara at Gangaikondacholapuram.

The most impressive aspect of the Brihadesvara temple at Thanjavur is perhaps the *vimana,* it is multi-tiered and reaches to a height of approximately sixty metres. The temple is constructed of granite, mostly of large blocks of rock which is not available in the neighbourhood and was therefore, brought from a distance. Inscriptions also confirm that different forms of fine arts were encouraged in the service of the temple, sculptures and painting were made even in the dark passages of the sanctum.

The Chola power eventually declined in the thirteenth century A.D. and was followed by other dynasties the Cheras, Pandyas and Nakayas who enlarged upon the earlier temples and buildings.

पट्टदकल

मालप्रभा नदी पर स्थित पट्टदकल बादामी से 16 किलोमीटर दूर स्थित है। पश्चिमी चालुक्य वंश के प्रारंभिक शासकों का राजतिलक समारोह इसी स्थान पर आयोजित किया जाता था। यहां पर नागर तथा द्रविड़ शैली में निर्मित मंदर साथ-साथ हैं। वृहत् पैमाने की वास्तुकला, परिसर का उत्थापन तथा आकाशीय अभिक्रिया एवं निर्मित विरुपाक्ष मंदिर प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य-दशा की पराकाष्ठा के समृद्ध अलंकरण को प्रस्तुत करते हैं।

पट्टकल मंदिर-समूह का सबसे विशालकाय विरुपाक्ष मंदिर सन् 740 में निर्मित हुआ था। इस वंश के विक्रमादित्य (द्वितीय) की पत्नी ने अपने पति द्वारा कांचीपुरम् में पल्लवों को पराजित करने के उपलक्ष्य में इसका निर्माण करवाया था। यह मंदिर दीवारों से घिरे एक आयताकार क्षेत्र में स्थित है तथा इस में एक विशाल प्रांगण एवं नदी के लिए कक्ष है। मंदिर के प्रमुख पूजा-स्थल के बाहर प्रदक्षिणा-पथ है। मंदिर का आंतरिक भाग विशेषकर स्तंभ, छतें व सोहावटी प्रचुर रूप से अलंकृत हैं। स्तंभों पर मूर्त उभारों के द्वारा रामायण तथा महाभारत के कथांशों को दर्शाया गया है।

पापनाथ को समर्पित इसके पूर्वी अग्रभाग के एक शिलालेख में मूर्तिकार *चत्तर-रेवाली-ओवाज्जा* का यशोगान करते हुए उसे 'दक्षिणी भाग का निर्माता' कहा गया है (अर्थात् वास्तुकारों के सर्वसिद्धि संघ का सदस्य होते हुए उसने मंदिरों का निर्माण किया)। इसी लेख से इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि विक्रमादित्य (द्वितीय) ने कांचीपुरम् से प्रसिद्ध वास्तुकारों एवं चित्रकारों को बुलवा कर कैलाशनाथ मंदिर से साम्य रखने वाले मंदिरों का निर्माण अपने शहर में करवाया था।

पट्टदकल में मल्लिकार्जुन, काशी विश्वेश्वर, संगमेश्वर, चंद्रशेखर, गलगनाथ, जंबूलिंग, कदासिद्धेश्वर तथा पापनाथ के अन्य महत्वपूर्ण मंदिर हैं। इस शैली में निर्मित मंदिरों का प्रारंभ बादामी से होकर महाकूट तथा एहोल तक विस्तारित हुआ था।

पट्टदकल के पश्चिमी में लगभग 500 मीटर दूर नौवीं शताब्दी का एक जैन मंदिर भी है।

Pattadakal

Pattadakal, on the banks of river Malprabha, is about sixteen kilometres from Badami. This royal commemorative Hindu site served as a setting for the coronation ceremonies of the Early Western Chalukyan rulers. At Pattadakal, the Nagara and the Dravida style of temples stand side by side. The large scale of architecture; the complex elevation and spatial treatments, the rich ornamentation represent the climax of the Early Western Chalukyan phase. The most evolved is perhaps the Virupaksha temple at Pattadakal.

The Virupaksha temple, the largest of the Pattadakal group was constructed in 740 A.D. by the queen of the Chalukyan King Vikramaditya II to commemorate the victory of her husband over Pallavas of Kanchipuram. The temple situated within a rectangular walled enclosure, has a large court and a hall for Nandi. The temple is dedicated to Siva. The sanctuary of the temple is surrounded by a circumambulatory passage. The interior of the temple is richly carved especially the pillars, ceilings and lintels. The columns have sculptural reliefs showing episodes from the Ramayana and the Mahabharata.

The inscriptions on the eastern facade of the temple dedicated to Papanatha eulogizes a sculptor named Chattara-Revali-Ovajja, who is described as one who "made the southern country" (that is, who built southern temples as a member of the architects guild of Sarvasiddhi). This inscription confirms that Vikramaditya II brought famous sculptors and architects from Kanchipuram and constructed temples resembling the Kailasanatha temple in his own city.

The Mallikarjuna, Kasivisvesara, Sangamesvara, Chandrasekhara, Galaganatha, Jambulinga, Kadasiddhesvar and Papanatha temples are other important temples at Pattadakal. This style of temple building initiated at nearby Badami continued at Mahakuta and Aihole.

About 500 metres to the west of Pattadakal is an old Jain temple of the ninth century A.D.

हम्पी

हम्पी नामक यह छोटा सा नगर कर्नाटक राज्य के बेल्लारी जिले के होसपेट ताल्लुके में स्थित है। तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित पंपापति का मंदिर इसके मध्य में है। इस सारे क्षेत्र में ग्रेनाइट पत्थर की, विभिन्न रंगों की छटाओं वाली छोटी-छोटी पहाड़ी चट्टानें यत्र-तत्र स्थित हैं। वनस्पति नाममात्र को पाई जाती है।

चौदहवीं शताब्दी में हम्पी विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। आज यह केवल विजयनगर शासकों की कीर्ति को दर्शाने वाले क्षेत्र में फैले भग्नावशेषों का स्थान मात्र है। हरिहर तथा बुक्का नामक दो भाइयों ने विजय के उपलक्ष्य में विजयनगर को स्थापित किया था। लगभग 26 वर्ग किलोमीटर में फैला यह नगर तत्कालीन राजाओं के गौरव का स्मारक है।

असीमित रूप में उपलब्ध सुंदर भवन-सामग्री ने यहां की वास्तुकला को काफी प्रभावित किया। विशाल आकार के शिलाखंडों की सहज-सुलभता ने वास्तुकारों को इन भव्य मंदिरों के डिज़ाइन निर्धारण में पूरी स्वतंत्रता प्रदान की थी। सन् 1509 से 1529 तक कृष्णदेव राय के शासनकाल में यह कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंची थी।

कृष्णदेव राय अत्यंत दूरद्रष्टा थे तथा समुद्री व्यापार के महत्व का उन्हें ज्ञान था। मालाबार तट के राजनैतिक नक्शे पर उभरी नई विदेशी शक्ति-पुर्तगालियों से उन्होंने अत्यंत मधुर संबंध स्थापित किये, क्योंकि वे उनके आश्रम के महत्व को समझ गए थे। वे स्वयं तो एक सक्षम तेलुगु कवि थे ही, साथ ही अन्य कवियों तथा विद्वानों के प्रश्रयदाता भी थे। तेलुगु के विद्वान एवं कवि पेद्दन्ना उनके राज्य के कवियों में सबसे प्रमुख थे।

उन्होंने अपने से पहले की नर्म स्तरीय पत्थरों का उपयोग करने की परिपाटी को त्याग कर लगभग सभी भवन ग्रेनाइट पत्थरों से बनवाए। साथ ही, उन्होंने अपने से पूर्व के मंदिरों का संरक्षण करते हुए अनेक नए भवन, राजमहल और पुल बनवाए तथा व्यापक स्तर पर सिंचाई व्यवस्था करवाई।

इस काल की वास्तुकला की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं, जैसे कि मुख्य पूजा-स्थल के आसपास उप पूजा-स्थलों एवं अन्य भवनों की संख्या का बढ़ना, अलंकृत शीर्ष वाले एकाश्म स्तंभ, विशाल चार दीवारी, गोपुरम में आदमकद आकृतियों तथा विशाल एकाश्म आकृतियों का उत्कीर्ण किया जाना। लक्ष्मी नरसिंह, कदलेकालु गणेश तथा नदी की आकृति इनके प्रमाण हैं।

हम्पी स्थित विठ्ठल, हज़ारा राम, विरूपाक्ष, कृष्ण तथा अच्युतरया मंदिर विजयनगरीय मंदिर शैली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

हम्पी में ही 'महारानी का स्नानागार' जैसे स्मारक भी हैं, जो हिंदू तथा मुस्लिम वास्तुशैलियों के मिश्रित रूप के अद्भुत नमूने हैं। इस काल में कांसे तथा अन्य धातुओं से भी सुंदर एवं आकर्षक मूर्तियां निर्मित हुईं।

मगर कृष्णदेव राय के पश्चात् यह वंश फल-फूल नहीं सका तथा सन् 1565-70 में इसका अंत हो गया। हम्पी के भग्नावशेष विजयनगर के वैभव की गाथा कहते-से प्रतीत होते हैं।

Hampi

Hampi, a small town in the Hospet Taluk of Bellary district in Karnataka grew around the Pampapati temple situated on the southern bank of the Tungabhadra river. The whole area is dotted with small barren rocky hills. The hills are of granite with many shades of colours from grey to brown and there is hardly any vegetation on them.

Hampi was once the capital of the Vijayanagar empire. Today it is a vast expanse of ruins indicating the glory of the Vijayanagar emperors. Vijayanagar, "the City of Victory" was founded at Hampi by the brothers Harihara and Bukka. The city of Vijayanagar which covered an area of more than twenty-six square kilometres was a glorious monument to the kings of this dynasty. The supply of huge blocks of stones of vast dimensions available in the vicinity allowed the architects freedom in designing temples of great beauty and the art of architecture reached its zenith during the reign of emperor Krishnadeva Raya who ruled from 1509 A.D. to 1529 A.D.

Krishnadeva Raya had great foresight as he was aware of the importance of sea trade. Realising his dependence on the Portuguese, who were new on the Indian political scene on the Malabar Coast, he established good relations with them. He himself was a fine Telugu poet and encouraged other poets and scholars, the most notable of whom was the Telugu poet Peddanna.

Almost all the buildings were built essentially in granite, a major departure from the soft schist stone which was used in the preceding periods. Alongwith the conservation of many earlier temples, a score of new public buildings, palaces, bridges and irrigation works of enormous proportions took place during the rule of Krishnadeva Raya.

There are many characteristic features of the art of architecture of this period such as the increase in the number of sub-shrines and other buildings around the main shrine, the introduction of composite monolithic pillars with ornate capitals, the provision of massive enclosure walls, the introduction of life-size stucco figures in the *gopurams* and carving of the huge monolithic statues as seen in the statues of Lakshmi, Narasimha, Kadalekalu Ganesa and Nandi.

The classical examples of Vijayanagar style of temples are the Vitthala, Hazara Rama, Virupaksha, Krishna and Achyutaraya temples, all in the capital city of Hampi.

There are other monuments at Hampi like the Queen's bath, with its elaborate stucco work and projecting balconies which is a blend of Hindu and Islamic architecture. There was a prolific production of bronze and metal images during this period.

This dynasty could not continue long after Krishnadeva Raya and virtually came to an end around 1565-70 A.D. The ruins speak volumes about the glorious period of the Vijayanagar emperors.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the *Shikhara* meaning 'head' has been derived from '*Shikha*', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

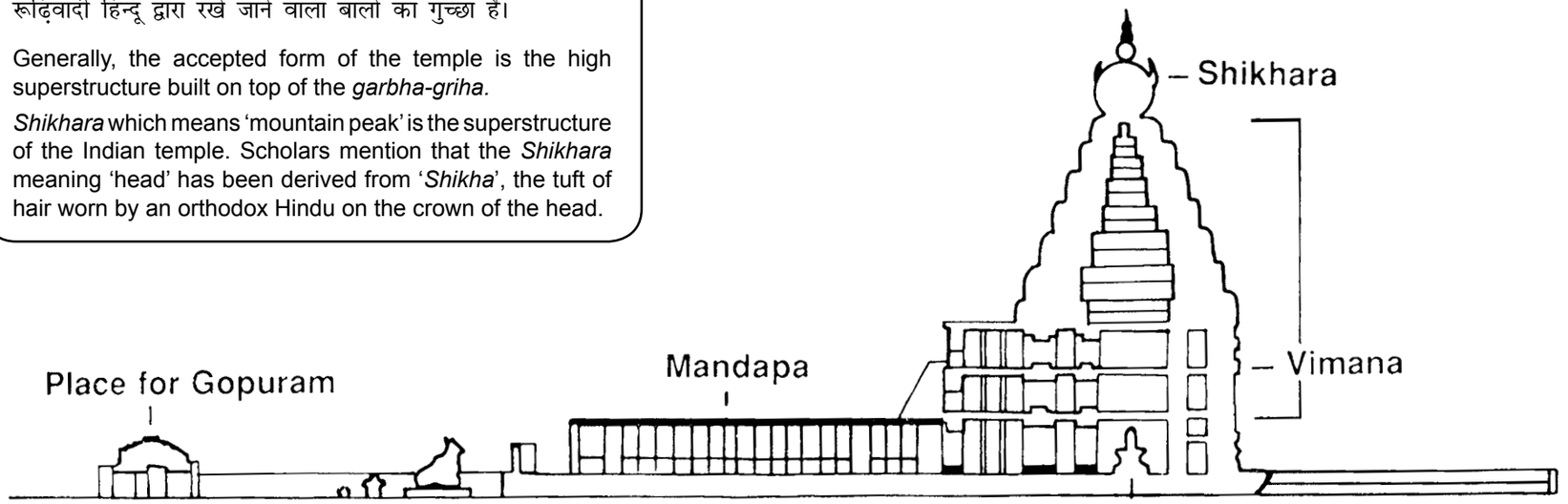

PLAN OF TEMPLE

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल-योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिणामों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several storeys high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of the temple built according to the proportionate measurements laid down in the *shastras.*

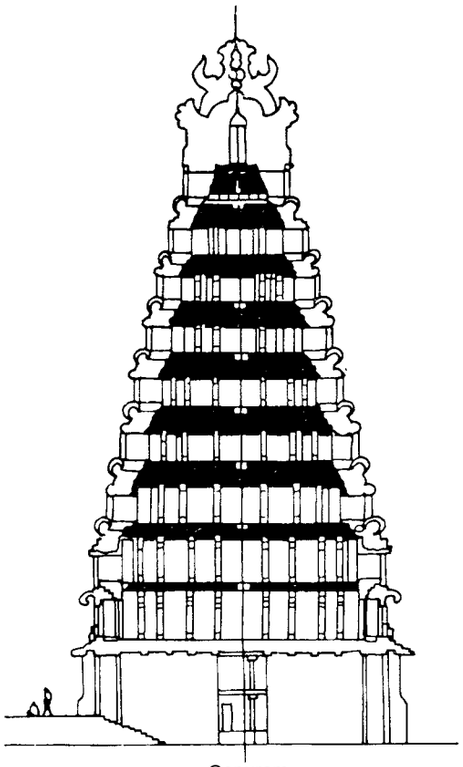

Gopuram

गर्भ-गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख देवी को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभी बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भाँति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गृह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The *Garbha-Griha* is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

गोपुरम्
Gopuram

'गोपुरम्' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश-द्वार है। गोपुरम् शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम्' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम् की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंज़िलें ऊँचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost storeys are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वार मंडप) होता है, जहाँ पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति-भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में, उदाहरणार्थ-महाबलीपुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम् स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थमंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch-like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mahabalipuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा–भारत

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

इस पैकेज में दिए गए 24 रंगीन चित्रों को आप कक्षा या स्कूल के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन चित्रों को आप गत्ते पर लगा कर इनका शीर्षक तथा चित्र के पीछे दिया गया मुख्य विवरण नीचे स्थानीय भाषा में भी लिख सकते हैं। भारतीय कला के शैक्षणिक महत्व को उजागर करने के लिए आप इन चित्रों की गहराई में जाकर उन विषयों के साथ अध्ययन कर सकते हैं, जो इनसे संबंधित हों।

अध्यापकगण भी नीचे सुझाई गई गतिविधियों में छात्रों को सम्मिलित कर चित्रों पर कार्य कर सकते हैं। इससे छात्रों की ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होगा।

केवल बाहरी रेखाओं वाले भारत के बड़े आकार के मानचित्र को लें। उसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थानों एवं शहरों को अंकित करें। विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत 1, 2, 3 एवं 4 में दिए गए चित्रों में दर्शाए भवनों के स्थान को पहचानें।

भारत में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का अध्ययन करें तथा अजंता एवं एलोरा को ध्यान में रखते हुए उन लोगों के बारे में जानकारी एकत्रित करें, जिन्होंने इनका निर्माण किया था। इन गुफाओं के निर्माण-काल तथा इनके उद्देश्य का भी पता लगाएं। इन्हीं से संबंधित निम्नलिखित विषयों के बारे में भी जानकारी एकत्रित करें–

- जलवायु
- प्रकृति-नदी, पेड़-पौधे तथा पक्षी
- गुफाओं के आसपास रहने वाले लोग तथा उनका व्यवसाय आदि।
- उस काल के संगीत, नृत्य, नाटक, शिल्प आदि।
- गुफाओं में दर्शाए गए देवी-देवता, पौराणिक कथाएं, त्यौहार, रीति-रिवाज।

सांस्कृतिक पैकेज में दिए गए भवनों एवं मूर्तियों के चित्रों को देख कर इनके रेखा-चित्र बनाएं।

इन पैकेजों में वर्णित भवनों एवं स्मारकों को देश के प्राचीन एवं मध्यकाल के यात्रियों/इतिहासकारों ने इन पैकेज़ों में दर्ज़ भवनों एवं स्मारकों को देखा तथा वे लोग इनसे संबंधित वृत्तांतों तथा संस्मरणों को लिखकर छोड़ गए हैं। इन वृत्तांतों एवं संस्मरणों को एकत्रित कर उनमें वर्णित इन स्थानों का शैलीगत वर्णन तथा स्थानों के नाम के उच्चारण को समझिए।

अपने स्कूल या घर का भू-चित्र बनाकर उसमें खिड़की, दरवाजों तथा स्तंभों की स्थिति दर्शाइए।

धार्मिक स्वरूप को समझना

सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि लोग बेहतर एवं संपूर्ण जीवन जिएँ। इन सभी धर्मों का बाह्य रूप, जैसे कि कर्मकांड तथा प्रथाएँ, प्रायः ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक और यहां तक कि भौगोलिक कारणों से एक-दूसरे से भिन्नता रखता है।

कई धार्मिक रीति-रिवाज एवं समारोह कृषि से जुड़े होते हैं तथा वे जीवन के आनंद को व्यक्त करते हैं। प्रायः हर काल के अपने धार्मिक विश्वासों ने

World Cultural Heritage Sites–India

Creative Activities for School Students and Teachers

The 24 pictures provided in this package can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on card-board with the title and description in the regional language. They can also be studied in depth with activities that bring out the educational value of Indian art. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below:

On a large outline map of India, mark important historical sites and places. Find the location of buildings given in the pictures in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3, and 4

Make a study of the rock-cut caves in India and collect information of the people who built these caves with special reference to Ajanta and Ellora caves. Find out the dates of these caves and for the purpose they were used. Collect the following information:

— Climate
— Nature–rivers, plants, animals and birds
— People living around the caves, their occupation, etc.
— Music, dance, drama, crafts, etc. of the period
— Customs, festivals, myths, gods & goddesses depicted in these caves.

Make a sketch/rough outline of the buildings/sculptures from the pictures provided in the Cultural Packages.

The buildings/monuments mentioned in these packages were visited by a number of travellers/historians in ancient and medieval periods of Indian history and these travellers have left a vivid and interesting account of these buildings/monuments. Collect such travelogues/memoirs. Notice interesting details in these travelogues, such as the style of descriptions, pronunciations of places and the surrounding areas of monuments of that period.

Make a simple ground plan of your school, home or college and show windows, doors and pillars.

Understanding religious concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geographical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with the annual agriculture cycle and the celebration of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors, and painters of the by-gone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.

— Choose pictures from the World Cultural Heritage Sites in India—1, 2, 3 and 4 of religious monuments, sculptures and paintings and write descriptions;
— Collect quotations which contain the essence of the philosophy of each faith;

अपने युग के वास्तुकारों, मूर्तिकारों एवं चित्रकारों को प्रभावित किया है। इसी कारण कारीगरों ने उस धर्म से संबंधित विशेष प्रतीकों का इस्तेमाल करते हुए सुंदर स्मारकों की रचना की है।

अध्यापकगण अपने छात्रों को भारत के लोगों एवं उनके विभिन्न धर्मों का अध्ययन करने को कहें। साथ ही उनसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, जैन तथा सिख आदि हर धर्म के बारे में जानकारी जुटाने के लिए भी कहें।

– विश्व सांस्कृतिक संपदा-भारत के 1, 2, 3, एवं 4 में से धार्मिक स्मारकों, मूर्तियों एवं रंगचित्र का चुनाव करें और हुलिया लिखें।

– हर मत के दर्शन को प्रकट करने वाली उक्तियों, लेखों का संग्रह करें।

– प्रत्येक धर्म की प्रार्थना से जुड़े अनुष्ठान के चित्रों को एकत्रित करें।

– हर जाति के महत्वपूर्ण संतों, कवियों, अध्यापकों तथा प्रख्यात व्यक्तियों के बारे में कहानियां और लेख लिखें।

– किसी एक धर्म, उदाहरणार्थ ईसाई धर्म को लें तथा

: ईसा मसीह

: सेन्ट ज़ेवियर

: मदर टेरेसा

का जीवन वृत्तांत लिखें।

या

: भगवान शिव, महिषासुरमर्दिनी, भगवान बुद्ध तथा महावीर के बारे में कहानियां लिखें।

: त्यागराज, तुलसीदास, मीराबाई

या

: पैगम्बर मोहम्मद, शेख सलीम चिश्ती के बारे में लिखें।

– विभिन्न स्मारकों का निरीक्षण कर भवन के फर्श, उत्थापन योजना तथा सजावट का अध्ययन करें।

त्यौहार एवं लोग

– सभी धर्मों के वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहारों का एक कैलेंडर बनाएं। यह भी बताएं कि वे किस प्रकार मनाए जाते हैं। इस कैलेंडर में–

: तिथि, मास

: त्यौहार से संबंधित कथा या मिथक

: मनाने का कारण

: त्यौहार से संबंधित गतिविधियां, जैसे कि अनुष्ठान, परिधान, खाद्य-पदार्थ, गीत, नृत्य आदि हों।

– विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत के 1, 2, 3 एवं 4 में से चित्रों को प्रदर्शित कर अधोलिखित विषयों को क्रमवार चित्रित करें–

: शिलाखंडों को तराश कर की गई वास्तुकला

: हिंदू मंदिर

: इस्लामी स्मारक

: बौद्ध मंदिर

— Collect pictures of rituals connected to prayer of each religion;

— Write stories of important saints, poets, teachers and important members of each community;

— Collect symbols associated with different religions and find their meaning and significance.

— Take one religion such as Christianity and write about the life of :

: Jesus Christ

: St. Xavier

: Mother Teresa

or

— : Stories about Siva, Mahisasuramardini, Lord Buddha, Lord Mahavira

or

: Thyagaraja, Tulsidas, Mira Bai

or

: Prophet Mohammad, Sheikh Salim Chisti

— Visit various monuments and study the floor and elevation plans and decorations of the building.

Festivals and People

— Make an annual calendar of festivals of all religions and describe how each one is celebrated, the calendar may include:

: Date, month

: Story or myth related to the festival

: Reason or purpose of celebration

: Activities connected with festival which may include customs, costume, food, songs, dances, etc.

— Exhibit pictures provided in the World Cultural Heritage Sites—India, 1, 2, 3 and 4 to illustrate the following themes in chronological sequences:

: Rock-cut architecture

: Hindu temples

: Stupas

: Islamic monuments

: Churches and Convents

: चर्च एवं कॉन्वेन्ट्स

सुलेख एवं चित्रण

किसी मनपसंद कविता को चुन कर उसे कोरे कागज के मध्य में लिखें। आपने स्मारकों या हस्तलिखित पुस्तकों में सुलेख को सजावटी प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल किया हुआ देखा होगा। जो कविता आपने कागज के मध्य में लिखी थी, उसके चारों तरफ पारंपरिक डिज़ाइन व सजावटी प्रतीकों का उपयोग करते हुए बार्डर बनाएं।

अधोलिखित विषयों पर निबंध लिखें–

: अजंता की गुफाओं के आसपास रहने वालों का जीवन।

: मेरा मनपसंद शहर।

: मैंने एलोरा के मंदिर-निर्माण में कैसे सहायता की?

: स्मारकों से विहीन विश्व!

: संपूर्ण विश्व में आपसी समझ एवं प्यार को बढ़ाने में स्मारकों की भूमिका।

भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, पुष्प के बारे में कविता, निबंध लिखें या उनका चित्र बनाएं। राष्ट्रीय प्रतीक वाली वस्तुओं जैसे कि मुद्रा तथा डाक-टिकटों आदि का संग्रह करें।

भगवान बुद्ध तथा महावीर जैसे महान व्यक्तियों के जीवन से संबंधित ऐसी कहानियां लिखें जो सादगी एवं सच्चाई, जीवन तथा प्रकृति को सम्मान देने के महत्व को दर्शाती हों।

भगवान बुद्ध, अकबर तथा राजराजा (प्रथम) आदि के बारे में नाटक लिख कर उनका मंचन करें।

विभिन्न संतों के चित्रों तथा उक्तियों का संग्रह करें।

प्रकृति तथा उसके कला पर प्रभाव विषय पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करें। पूछे जाने वाले प्रश्न, प्रकृति व कला के विभिन्न रूपों जैसे मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत आदि पर होने चाहिए।

अधोलिखित विषयों पर आप वाद-विवाद एवं भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित कर सकते हैं–

: भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संपदा को क्षति पहुंचाकर विकास का कार्य नहीं होना चाहिए।

: विज्ञान व प्रौद्योगिकी के नाम पर क्या मानव को प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना चाहिए?

: क्या हमारे स्रोत हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे?

: हम जो प्रकृति से लेते हैं, क्या उसे वापस करते हैं?

भारत के विभिन्न प्रांतों के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, कला व सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में प्रसिद्ध भारतीयों के बारे में कहानियां तथा लेख लिखें।

Calligraphy and Illustrations

Choose any poem that you like and write it neatly in the centre of a clean new page. You may have seen calligraphy on monuments as decorative motifs or in hand-written manuscripts. Try and make a beautiful border around the poem that you have written using traditional designs and decorative motifs.

Write an essay on the following topics in your best handwriting.

: Life of the people living around the Ajanta Caves

: The City I like best today

: I helped to build the Kailasanatha temple at Ellora

Write your views on how the world would be without these beautiful monuments.

Indicate the role these monuments play in enhancing love and understanding.

Write poems, essays or paint pictures of India's national animal, bird, flower and collect items which have the national emblem such as currency notes, stamps, etc.

Write stories of the life of Lord Buddha and Lord Mahavira which teach us values such as respect for nature, life, simplicity and truth.

Write and enact dramas on the lives of Lord Buddha, Lord Mahavira, Akbar, Rajraja I.

Conduct quiz competitions on nature in general and influence of nature on art. These quiz competitions should cover all aspects of nature and all the arts such as sculpture, painting, dance, music, etc.

Conduct debate competitions on some topics such as:

: Development should not be at the cost of losing our natural and cultural heritage;

: In the name of science and technology—should man interfere with nature's master plan?

: Will our resources last forever?

: Do we give back to nature what we receive from it?

Write stories of famous Indians in the field of science and technology, art and social sciences.

Illustrated Cards

विश्व सांस्कृतिक सम्पदा-भारत
World Cultural Heritage Sites-India
4

1. उत्कीर्ण फलक, महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

महाबलीपुरम् पल्लवों का बंदरगाह था तथा वहां की गई खुदाई से ज्ञात हुआ है कि उसकी जल-वितरण प्रणाली अत्यंत सुनियोजित थी। यह अपने तट मंदिर, चट्टानों को तराशने की वास्तुकला, गुफाओं, उभारदार उत्कीर्ण शिल्प तथा रथों के लिए प्रसिद्ध है।

महाबलीपुरम् की जो अत्यंत उल्लेखनीय मूर्ति-शिल्प रचना है, वह महेंद्रवर्मन (प्रथम) या उसके बेटे मामल्ल द्वारा निर्मित प्रसिद्ध उभारदार मूर्ति-शिल्प है। यह दो विशाल शिलाखंडों को तराशकर बनाई गई है तथा इनके बीच में एक दरार सी है। मूर्तिकारों ने सूर्य, चंद्रमा तथा परियाँ आदि खगोलीय शक्तियाँ एवं पृथ्वी व जल की आकृतियाँ उत्कीर्ण की हैं। इसे ''गंगा का अवतरण'' या ''अर्जुन का तप'' नामों से पहचाना जाता है। इस फलक पर उत्कीर्ण विभिन्न आकृतियों में एक तपस्वी की आकृति विशेष स्थान रखती है। उसे एक पैर पर खड़ा दर्शाया गया है तथा उसके हाथ आसमान की ओर फैले हैं। इस पूरी आकृति की लंबाई 30 मीटर से ज्यादा एवं ऊँचाई लगभग 15 मीटर है।

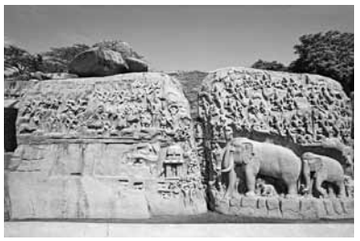

1. Sculptural Panel, Mahabalipuram, Tamil Nadu

Mahabalipuram was the sea port of the Pallavas and excavations show that the town had a well planned water system. It is famous for its Shore temple, rock-cut architecture, caves, sculptural reliefs and *rathas.* The most remarkable sculptural composition at Mahabalipuram is the famous relief attributed to Mahendravarman or his son Mammalla. It has been carved out of two large boulders, with a narrow fissure between them. The sculptors have carved out celestials like the sun, the moon, the earth, water and nymphs. It has been alternately identified as “Descent of Ganga” or “Arjuna’s Penance”. Among the numerous sculptures, a prominent figure is of an ascetic standing on one leg and stretching his arms upwards.

This relief measures nearly thirty metres in length and is more than fifteen metres high.

2. महिषासुरमर्दिनी गुफा, महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

पल्लवकालीन मूर्तिकार पौराणिक कथाओं तथा दंत-कथाओं एवं संपूर्ण प्रकृति के चित्रण में विशेष संतुलन हासिल करने में सफल रहे थे।

महाबलीपुरम् में हमें विभिन्न वास्तु-शैलियां तो देखने को मिलती ही हैं, साथ ही, देवी-देवताओं की कथाओं के अंश एवं धार्मिक विषयों वाली आकृतियां भी देखने को मिलती हैं।

महिषासुरमर्दिनी गुफा में महिषासुर नामक दानव से युद्ध करती देवी दुर्गा की आकृति स्वयं में कला का अद्‌भुत नमूना है। यह गुफा एक लंबे कक्ष जैसी है तथा उसके मध्य में तीन प्रकोष्ठ हैं। देवी दुर्गा सिंह पर सवार हैं तथा भैंसे के सिर और मानवीय शरीर वाले दानव महिषासुर को दाहिनी तरफ दर्शाया गया है। उसकी मुद्रा हमले से बचाव की है। दर्शाए गए प्राकृतिक भाव एवं मुद्राएं दर्शकों पर नाटकीय प्रभाव डालते हैं।

2. Mahisasuramardini Cave, Mahabalipuram, Tamil Nadu

The sculptors in the Pallava period achieved a remarkable balance between the portrayal of myths and legends and the world of nature. Apart from a variety of architectural styles which can be seen at Mahabalipuram, episodes from religious themes and stories relating to the deeds of gods and goddesses have also been sculpted.

A representation of Durga engaged in battle with the demon Mahisasura in the Mahisasuramardini cave is a great work of art. The cave is a long hall having a triple cell in the centre. Devi Durga sits on her lion while Mahisa, depicted as a human figure with a buffalo head, is shown at the right, as if recoiling from her attack. The natural scaling of the figures are charged with emotion and the animated poses create a dramatic effect.

3. रथ, महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

दक्षिण भारत पर अपने शासन-काल के दौरान पल्लवों ने अपने पूरे राज्य में स्थान-स्थान पर मंदिर बनवाए। इन निर्माण कार्यक्रमों के पहले चरण में पल्लवों ने चट्टानों को तराश कर स्मारक बनवाए तथा दूसरे चरण में मूर्तिमय भवनों या उत्कीर्ण भवनों का अधिपत्य रहा।

महाबलीपुरम् में बहुत से स्वतंत्र अचल एकाश्म भवन हैं। इन्हीं में समुद्र के समीप ''पंच पांडव रथ'' के नाम से प्रसिद्ध पांच रथ भी हैं। इनके नाम हैं–धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, द्रौपदी रथ तथा नकुल-सहदेव रथ। संभवत: ये मामल्ल (प्रथम) के शासन के दौरान उत्कीर्ण किए गए थे। इनमें अनेक मंजिलों एवं विभिन्न रूपों की छतों वाले मंदिरों की अलंकृत शैली के प्रारंभिक रूप की झलक मिलती है। यह भी एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि कुछ छतों का रूप ठीक वैसा है, जैसा कि गांवों में घरों के छप्परों का होता है।

3. Rathas, Mahabalipuram, Tamil Nadu

During their rule in South India, the Pallavas constructed a large number of temples throughout their kingdom. The early phase of architectural activity of the Pallavan rule mainly consisted of rock-cut monuments and the later phase is known for structural buildings.

There are many free standing monolithic buildings scattered in Mahabalipuram of which the five *rathas* near the sea popularly known as the 'Panch Pandava *Rathas'* are Dharmaraja *ratha,* Bhima *ratha,* Arjuna *ratha,* Draupadi *ratha* and Nakula Sahadeva *ratha*. These were probably carved out during the reign of Mamalla I. One sees the beginning of an elaborate style of temple architecture of several storeys and having a variety of roof styles.

It is interesting to note that some of the roofs closely resemble the thatched roofs of village homes.

4. धर्मराज रथ, महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

महाबलीपुरम् में स्थित प्रसिद्ध पंच पांडव रथ अर्थात् पांच रथों में प्रथम धर्मराज रथ आकार में शेष रथों से विशाल है। यह एकाश्म रथ एकदम दक्षिणी छोर पर स्थित है। इसका धरातल चौकोर है तो ऊपर का आकार पिरामिड जैसा है। चट्टान तक्षित इन रथों का आकार मंदिर के विमान जैसा है। धर्मराज रथ पर सबसे अधिक आकृतियां हैं। रथ का हर स्तर भित्ति स्तंभों पर टिका है। यही भित्ति स्तंभ आलों की कतार भी बनाते हैं। धर्मराज रथ के इस विशाल मूर्ति-शिल्प के विभिन्न हिस्सों में लगभग 38 अभिलेखों की छोटी पट्टियां हैं।

4. Dharmaraja Ratha, Mahabalipuram, Tamil Nadu

The Dharmaraja *ratha* is the largest of the well known 'Five *Rathas*' known as the "Panch Pandava *Rathas*" in Mahabalipuram. This monolith structure is situated at the southernmost end. It is pyramidal in shape on a square base, the *vimana* of the Dharmaraja *ratha* forms the highest part of the boulder on which these *rathas* have been carved. This *ratha* has the largest number of sculptures. Each tier of the *ratha* is supported by brackets and pilasters which form rows of niches. There are about thirty-eight short label inscriptions on the Dharmaraja *ratha* found in different parts of the structure.

5. समुद्र तट पर स्थित मंदिर, महाबलीपुरम्, तमिलनाडु

700 से 728 शताब्दी तक शासन करने वाले पल्लव राजा नरसिंहवर्मन (द्वितीय) राजसिंह ने अपने शासन काल में महाबलीपुरम् में अनेक मूर्तिमय मंदिरों एवं समुद्री तट पर स्थित मंदिर का निर्माण करवाया था। समुद्री किनारे के इस मंदिर के प्रारूप में, चूंकि तीन विशिष्ट पूजा क्षेत्रों की योजना थी, इस कारण इसका निर्माण विभिन्न चरणों में किया गया।

बंगाल की खाड़ी के किनारे पर स्थित यह मंदिर उस समय की वास्तुकला का एक उत्तम उदाहरण है। मुख्य मंदिर पूर्वाभिमुखी है। यह भगवान शिव को समर्पित है और यहां शिवलिंग स्थापित है। मंदिर का विमान सँकरा एवं ढलुवाँ है। मंदिर की चारदीवारी एवं मध्य के पूजा-स्थल के बीच प्रदक्षिणा के लिए स्थान है। बाहर के एक प्रकोष्ठ में शेषशायी भगवान विष्णु का मूर्ति-शिल्प है।

5. Shore Temple, Mahabalipuram, Tamil Nadu

The Pallavan King, Narasimhavarman II Rajasimha who ruled from about 700 A.D. to 728 A.D. constructed structural temples. The Shore temple at Mahabalipuram is said to be a product of his reign. The temple was built in stages as the plan of the temple consists of three distinct worship areas.

On the shores of the Bay of Bengal, the temple is a fine example of masonry work of its time. It was built in the prevailing architectural style.

The main temple faces east, is dedicated to Siva and enshrines the famous *linga.* The *vimana* is narrow and sloping. There is a circumambulatory passage between the boundary wall and the central shrine. There is a cell outside the superstructure which enshrines Seshasayi Vishnu.

சிவ சிவ

6. वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, तमिलनाडु

दसवीं शताब्दी ईसा प. में चोलों ने पल्लवों पर विजय प्राप्त की। भारतीय इतिहास में चोल-काल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियों का उल्लेख प्राप्त होता है, क्योंकि प्रसिद्ध चोल कांस्य शिल्प कृतियों को भारतीय कला की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में जाना जाता है।

तंजावूर स्थित वृहदेश्वर मंदिर एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोल स्मारक है। इस मंदिर को शिव-महिमा के कारण वृहदेश्वर कहा जाता है। इसे ''राजाओं के राजा'' राजराजा प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया। स्वयं राजाने राजतिलक के समय अपना नाम इसी प्रकार घोषित किया था।

मंदिर की वास्तुकला-योजना अत्यंत साधारण-सी है। प्रसाद, मंडप, नंदी और दो गोपुरम् पूर्व-पश्चिम अक्षांश के ठीक ऊपर अवस्थित हैं। मंदिर का सर्वाधिक प्रभावकारी पहलू है–उसका विमान। यह साठ मीटर ऊंचा है और निर्माण के समय शायद यह एशिया की सबसे ऊँची वास्तुकला-संरचना रही होगी। विमान के ऊपर अवस्थित विशाल शिखर का वजन अस्सी टन से भी अधिक होगा, ऐसा माना जाता है। चित्र (आन्तरिक चित्र) में हम शिखर की चौदह अवरोहात्मक मंज़िलें देख सकते हैं। विमान के दोनों ओर बैठे हुए अग्रोन्मुख शीर्ष वाले नंदी हमें महाबलीपुरम् में नंदी के प्रतिरूप की याद दिलाते प्रतीत होते हैं। तीर्थ मंदिर में स्थापित लिंग मंदिर के ही समान, आकार में विशाल हैं। विमान के चबूतरे पर स्थित कुछ शिलालेख चोल-काल के दौरान जीवन-शैली का विवरण प्रस्तुत करते हैं।

इस मंदिर को स्वयं राजराजा-प्रथम के नाम के आधार पर ''राजराजेश्वर मंदिर'' अथवा ''महान मंदिर'' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि उस समय शैव मंदिरों में स्थापित लिंग का नाम, प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा राजा या संरक्षक के नाम पर रखने की परंपरा प्रचलित थी।

6. Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

The Cholas succeeded the Pallavas in the 10th century A.D. In Indian history, the Chola period is seen as one of considerable artistic achievements, the famous Chola bronze sculptures are considered master-pieces of Indian Art.

The Brihadesvara temple at Thanjavur is the most important Chola monument. The temple is called the Brihadesvara in reference to Siva's greatness. It was built by Rajaraja I "King of Kings", as he announced himself on his coronation.

The plan of the great temple is a very simple one. *Prasada Mandapa, Nandi* and the two *gopurams* are all exactly aligned on the east-west axis. The most impressive aspect of the temple is its *vimana,* which reaches to a height of sixty metres and may have been the tallest structure in South Asia at the time it was built. The huge *shikhara* atop the *vimana* is believed to weigh more than eighty tons. In the picture (inset), one sees the fourteen diminishing tiers of the *shikhara.* The Nandis on the *vimana,* seated sideways but with their heads turned to the front, remind us of their counterparts at Mahabalipuram. The *linga* enshrined in the sanctuary is colossal in size, like the temple itself. There are several inscriptions on the platform of the *vimana* giving details of life during the Chola period.

The temple is also known as the 'Great Temple' or the 'Rajarajesvara Temple' named after Rajaraja I himself. It was a common practice to name the *linga* enshrined in a Saivite temple after a famous individual, King or patron.

7. गोपुरम्, वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, तमिलनाडु

वृहदेश्वर मंदिर एक विशाल अहाते में स्थित है। दो मंदिर प्रवेशमार्ग-गोपुरम् हैं, जहां पूर्व की ओर से मंदिर में प्रवेश किया जा सकता है।

इस मंदिर में गोपुरमों की वास्तुकलात्मक शैली, दक्षिण भारतीय मंदिरों के गोपुरमों के निर्माण की प्राचीन परंपराओं से अलग है।

मंदिर के दोनों पूर्वी गोपुरमों पर 1014 ईसा प. के समय के शिलालेख हैं। यह शायद गोपुरमों के निर्माण पूर्ण होने के वर्ष को इंगित करते हैं। निर्माण में पत्थर तथा ईंट दोनों का प्रयोग किया गया है। भूतल पत्थरों से निर्मित है, जबकि ऊपरी मंजिलों के निर्माण में ईंटों का प्रयोग किया गया है। यह संयोजन अधिरचना के वजन को कम करने के उद्देश्य की पूर्ति करता प्रतीत होता है।

चित्र में दिखाई देते मंदिर का आंतरिक गोपुरम् तीन मंज़िला है और इसकी बाह्य दीवारों पर भित्ति-स्तंभयुक्त आले और कुछ शिल्प हैं।

7. Gopuram, Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

The Brihadesvara temple is situated within a large compound. There are two temple gateways, *gopurams* which provide entry into the temple from the east.

The architectural style of the *gopurams* of this temple marks a departure from earlier traditions of constructing *gopurams* in South Indian temples.

Both the eastern *gopurams* of the temple bear inscriptions of 1014 A.D. by which year they had presumably been completed. Both stones and bricks are used in the construction. The basement is made of stones whereas in the upper storeys, bricks have been used. This combination served the purpose of minimising the weight of the superstructure.

The inner *gopuram* of the temple, as seen in the picture, is three-tiered and the outer walls have plastered niches and a few sculptures.

8. नन्दी मण्डप, वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, तमिलनाडु

भारत में सभी देवी-देवताओं के या तो अपने वाहन हैं या फिर वह किसी निश्चित प्रतीक द्वारा दर्शाये जाते हैं। भगवान शिव का वाहन नन्दी बैल है।

भगवान शिव को समर्पित सभी मुख्य मंदिरों में पूजा-स्थल के प्रवेशद्वार पर ''नन्दी'' को देखा जा सकता है।

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में निर्मित इस वृहदेश्वर मंदिर के प्रांगण में दो गोपुरम् भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर के प्रवेश द्वार हैं। मुख्य मंदिर के प्रांगण में प्रवेश करते ही मण्डप में पत्थर से निर्मित नन्दी की एक विशालकाय आकृति देखी जा सकती है। मुख्य मंदिर के प्रदक्षिणा-पथ एवं मंदिर के अन्तराल की दीवारों तथा छत पर बहुत ही सुन्दर कला-चित्र बने हुए हैं। चित्र चोल-काल की चित्रकला से मेल खाते हैं तथा किसी भी कला-विद्यार्थी के लिये विशेष जिज्ञासा के केंद्र हो सकते हैं।

नन्दी की मूर्ति की लम्बाई लगभग छः मीटर है। बाद में बनाए गए मण्डप की छत पर भी चित्रकारी की गयी है। सम्भवतः मंदिर के निर्माता मंदिर के अन्य भागों में पाई गई चित्रकारी से अत्यधिक प्रभावित हुए होंगे।

8. Nandi Mandapa, Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

In India, all the Gods and Goddesses have either their *vahana* vehicle, or they are represented by certain symbols. Lord Siva has Nandi, the bull as his *vahana.*

In all major temples dedicated to Siva, the Nandi is seen before the main shrine.

Within the compound of the Brihadesvara temple, which was built in the beginning of the 11th—century A.D., there are two *gopurams* which are in line with the main temple dedicated to Siva. An enormous monolithic representation of Nandi can be seen as one enters the main temple. The circumambulatory passage of the main shrine and the *antaral* of the temple have beautiful paintings on the walls and ceilings. The paintings in the main shrine are of special interest to an art student and have similarities with paintings of the Chola period.

The Nandi measures nearly six metres in length. The pavillion which was built at a later date has paintings covering the ceiling, the builders of the pavillion were perhaps inspired by the paintings found on walls in other parts of the temple.

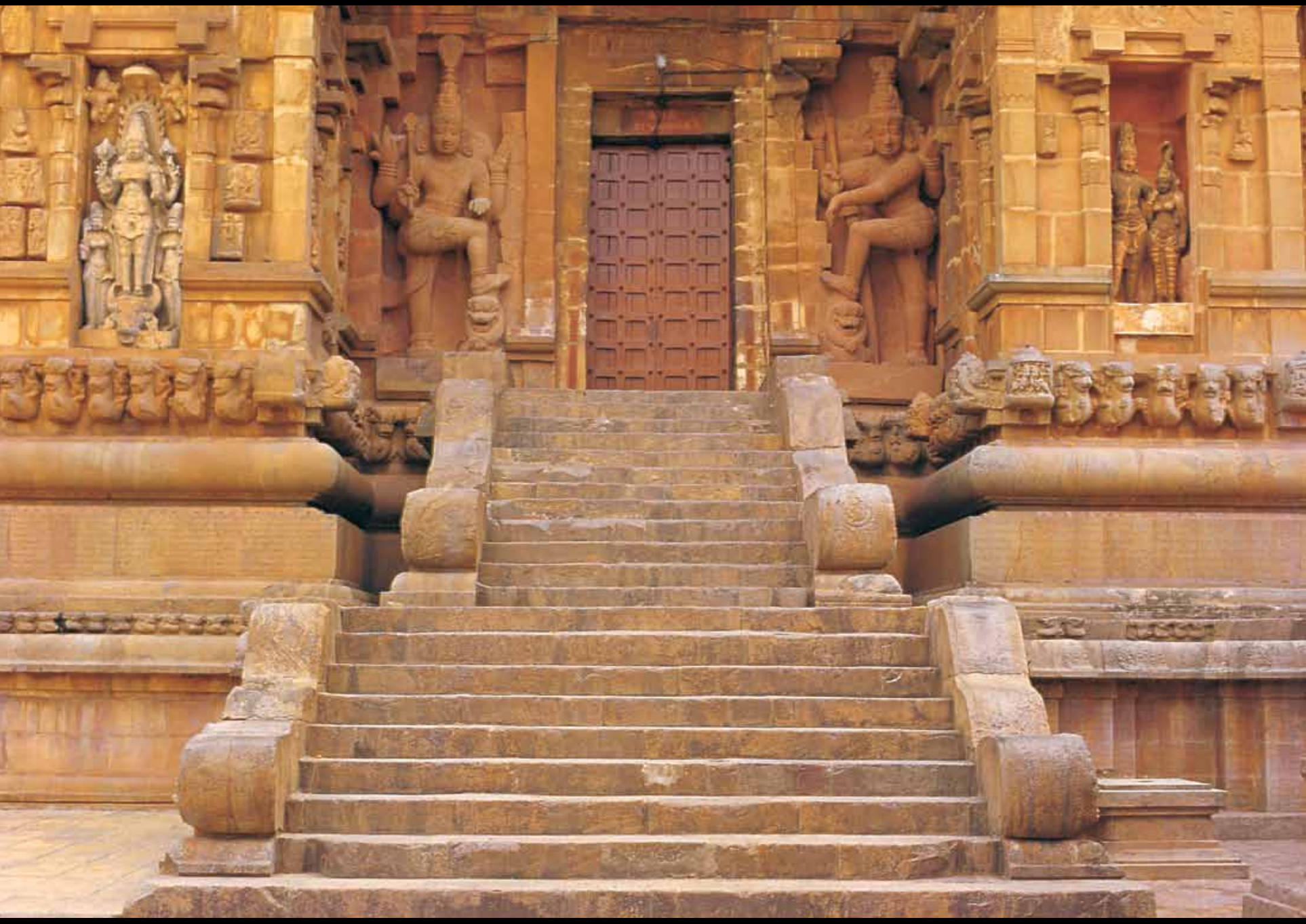

9. वृहदेश्वर मंदिर का प्रवेश मार्ग, तंजावूर, तमिलनाडु

वृहदेश्वर मंदिर, चोल-साम्राज्य के वैभव को उद्घाटित करता है। मंदिर के विमान की स्तंभपीठ पर सुरुचिपूर्ण अक्षरों में पुरालेखों की एक लंबी शृंखला है, जो चोल-काल के इतिहास को अभिव्यक्त करती है।

सुरुचिपूर्ण चोल-ग्रंथ तथा तमिललिपि में प्राप्त शिलालेख कला के विविध पहलुओं की जानकारी देते हैं, जिन्हें मंदिर की सेवा के लिए प्रोत्साहित किया गया। अधिकारियों के मेज़बानों, सेवकों और राजराजा द्वारा जारी आदेशों सहित मंदिर की सेवा से जुड़े सभी व्यवसायों का हमें शिलालेखों में संदर्भ प्राप्त होता है।

जब हम पूर्व की ओर से मंदिर में प्रवेश करते हैं, तो हमें वहाँ पर स्तंभयुक्त मंडपम् तक पहुँचती सीढ़ियों की पंक्तियाँ दिखती हैं।

9. Entrance to Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

The Brihadesvara temple reflects the splendour of the Chola empire. The plinth of the *Vimana* of the temple has a long series of epigraphs incised in elegant letters which reveal the history of the Chola period.

The inscriptions in elegant Chola Grantha and Tamil letters also give an idea of various facets of art which were encouraged in the service of the temple. Almost all the professions in the service of the temple including host of officials, servants and orders issued by Rajaraja are referred to in the inscriptions.

As one enters the temple from the east, there is a flight of steps leading to the pillared *mandapam.*

10. गण, वृहदेश्वर मंदिर, तंजावूर, तमिलनाडु

प्राचीन चोल मंदिरों की वास्तुकला शैली पर आधारित होने पर भी, वृहदेश्वर मंदिर के विमान की दीवारों का बाह्य निरूपण, अपने अत्यधिक प्रक्षेपित आलों, गहन रूप से उत्कीर्ण भित्ति-स्तंभ और बड़ी गोलाकार उत्कीर्ण आकृतियां दर्शकों पर अलग तरह का प्रभाव डालती हैं। शिल्पयुक्त अलंकरण की योजना, प्राचीन मंदिरों की तुलना में कहीं अधिक विस्तृत है। चूँकि शिल्पकला मंदिर वास्तुकला का एक अनिवार्य भाग था, अतः विमान, अंतरा और मुखमंडप की दीवारों पर अवस्थित आकृतियों की ऊपरी मंजिल पर त्रिपुरान्तक रूप में शिव की तीस प्रस्तुतियां प्राप्त होती हैं। साथ ही, सक्रिय ओजस्वी राक्षस, दुखी होकर उनसे चिपकती हुई स्त्रियों के चेहरे पर भय के भाव, शिव के इर्दगिर्द अवस्थित देवताओं के चमत्कार की संभावना, बौनेगणों और अपने चूहे पर सवार गणेश को भी चित्रांकित किया गया है।

प्रस्तुत चित्र में हम शंख से क्रीड़ा करते गठीले बौने गण को देख सकते हैं। अधिष्ठान के आद्योपांत शिलालेख भी देखे जा सकते हैं।

10. Gana Brihadesvara Temple, Thanjavur, Tamil Nadu

Although based on earlier Chola temples, the exterior treatment of the walls of the *vimana* of the Brihadesvara temple with its heavily recessed and projecting niches, deeply carved pilasters and huge, carved-in-the-round figures creates an overwhelming effect on the visitor. The scheme of sculptural decoration is much more elaborate than that of earlier temples. As sculpture was an inseparable part of temple architecture, the upper tier of figures on the *Vimana, Antarala* and *Mukhamandapa* walls bear thirty representations of Siva in his Tripurantaka form. Other sentiments which have been portrayed are vigorous *rakshasas* in action; the emotion of fear in the sorrowful faces of their women clinging to them in despair; the spirit of wonder of gods surrounding Siva; the dwarf *ganas* and of Ganesa hastening on his mouse.

One sees in the picture a stocky dwarf *gana,* playing the conch. The inscriptions running throughout the plinth can also be seen.

11. आम दृश्य, मंदिर परिसर, पट्टदकल, कर्नाटक

ऐहोल और बादामी के पश्चात् बनी प्रमुख चालुक्य राजधानी पट्टदकल, बादामी से लगभग सोलह किलोमीटर दूर है। यह स्थान राज्य के प्रमुख सिंचाई स्रोत, चित्रोपम मालप्रभा नदी के किनारे अवस्थित है। प्रस्तुत कार्ड में दो चित्र देखे जा सकते हैं, एक चित्र में स्थान का अग्रभाग तथा अन्य में नदी के किनारे से दिखाई देता आंशिक क्षेत्र प्रदर्शित है। पट्टदकल को सुन्दर प्राचीन पश्चिमी चालुक्य मंदिरों के लिए जाना जाता है। यह राज्य विजयादित्य और विक्रमादित्य के शासनकाल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। पट्टदकल में वास्तुकला की शैली आठवीं शताब्दी ईसा प. के प्रथम अर्द्धभाग में अद्‌भुत हुई।

पट्टदकल में मंदिरों की दो शैलियाँ देखी जा सकती हैं–नागर और द्रविड़।

वास्तुकलात्मक विवरणों का अध्ययन करते समय हमें पता चलता है कि दोनों ही शैलियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है।

प्रमुख मंदिर–स्थान के पूर्व में स्थित जैन मंदिर राष्ट्रकूट-काल से जुड़ा रहा है।

11. General view, Temple Complex, Pattadakal, Karnataka

Pattadakal, a major Chalukyan capital seat after Aihole and Badami, is about sixteen kilometres from Badami. The site is located on the banks of the picturesque Malaprabha river, the main irrigation source for the kingdom. The card shows two pictures, one being the front portion of the location and the other shows the site partially from the river bank. Pattadakal is known for its beautiful early Western Chalukyan temples. The kingdom reached its zenith under the rule of Vijayaditya and Vikramaditya. The style of architecture at Pattadakal evolved in the first half of the eighth centry A.D.

At Pattadakal, the two styles of temples *nagara* and *dravida* can be seen. While studying the architectural details, one finds that both the styles have influenced one another.

The Jain temple to the east of the main temple site has been associated with the Rashtrakuta period.

12. विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि प्राचीन पश्चिमी चालुक्य वंश के राजा का राजतिलक समारोह पट्टदकल में संपन्न हुआ था। शिव को समर्पित, विरुपाक्ष मंदिर को पूर्व आठवीं शताब्दी में चालुक्य रानी ने, अपने राजसी पति द्वारा पड़ोसी पल्लव राज्य पर विजय प्राप्त करने की खुशी में बनवाया। विरूपाक्ष अग्र भाग में नंदी मण्डप सहित एक जीवंत तीर्थ मंदिर है। आलों में जोड़ों (दंपत्तियों) की विशाल आकृतियां हैं, जो उस समय की केश सज्जा तथा आभूषणों को प्रदर्शित करती हैं। छत पर बनी सूर्य-आकृति आत्मा की जीवंतता को प्रतीक-रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें सूर्य देव अरुण द्वारा हाँके जा रहे सात घोड़ों से युक्त रथ में उषा और प्रत्यूषा के साथ खड़े हैं।

वर्गाकार शिलाखण्डों से युक्त विरूपाक्ष मंदिर के स्तंभों पर रामायण तथा महाभारत के प्रसंगों की चित्रवल्लरियों की बहुलता है। ह्रासमान मंज़िलों वाली सोपानमयी शृंखला के मंदिर से मीनार ऊँची है।

12. Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

It is commonly believed that the coronation ceremony of the early Western Chalukyan Kings took place at Pattadakal. The Virupaksha temple, dedicated to a form of Siva, was constructed in the early 8th century A.D. by a Chalukyan queen to commemorate the victory of her royal husband over the neighbouring Pallava kingdom. The Virupaksha is a living shrine with the Nandi pavillion in front. In the niches, are large figures of couples which show the hairstyles and jewellery of the times. The *Surya* figure on the ceiling shows a liveliness of spirit, standing with *Usha* and *Pratyusha* in a seven-horse chariot driven by *Aruna.*

The Virupaksha temple pillars having square blocks carry a profusion of friezes from the Ramayana and the Mahabharata. The tower rises above the sanctuary in a series of stepped, diminishing storeys.

13. क. कैलाश पर्वत को हिलाता रावण, विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

भगवान शिव को समर्पित सभी महत्वपूर्ण स्थानों और मंदिरों में शिव से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण कथाओं को तक्षित कर मूर्तिकला और चित्रकला के माध्यम से साकार किया गया है। ऐसी ही एक कथा दानव रावण द्वारा पर्वतराज कैलाश को हिलाने की है। अनेक बार विभिन्न कलाकारों ने अपनी-अपनी कल्पना-शक्ति के अनुसार इसे जो भिन्न-भिन्न रूप दिए हैं, उनका अपना एक अलग नाटकीय प्रभाव पड़ता है। एलोरा व एलिफेंटा की गुफाओं में इस दृश्य को बड़ी ही भव्यता से आकार दिया गया है।

प्रस्तुत शिल्प में रावण को अपने पूरे जोश एवं बल के साथ पर्वत को हिलाते दिखाया गया है। कलाकारों ने कैलाश पर्वत को हिलाने की प्रक्रिया को रावण की बहु-भुजाओं की गतिमान अवस्था में दर्शाते हुए एक बहुत ही सुंदर मोहभ्रम पैदा किया है।

तक्षित शिल्पकृति के भगवान शिव एवं पार्वती को इस चित्र में नहीं दिखाया गया है।

13. ख. विष्णु अवतार, वामन, विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

हिन्दू पुराणों के अनुसार, विष्णु के दस अवतार हैं, जिन्हें प्रचलित रूप में दशावतार के नाम से जाना जाता है। ये दस अवतार हैं : मत्स्य (मछली), कूर्म (कछुआ), वाराह (सूअर), नरसिंह (आधा सिंह, आधा मानव), वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और घोड़े पर सवार दसवां अवतार-कल्कि-जो अभी अवतरित होना शेष है।

प्रस्तुत चित्र में, हम विष्णु के पाँचवें अवतार वामन को देख सकते हैं। इसे त्रिविक्रम के नाम से भी जाना जाता है, जिसने संपूर्ण ब्रह्माण्ड अथवा त्रिलोक अर्थात् पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल को तीन पगों में नाप लिया था।

13. A. Ravana Shaking Mount Kailasa, Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

There are certain stories associated with Siva which have been sculpted or painted in all the major sites or temples dedicated to the Lord.

One such story is of Ravana shaking Mount Kailasa. One sees this theme depicted in many temples. Each artist has depicted this dramatic effect in his own unique manner. The theme of Ravana shaking the throne of Siva and Parvati on Mount Kailasa had already been depicted majestically in Ellora and Elephanta. Ravana is shown here shaking the throne with all his energy and vigour.

The artist has shown Ravana shaking the mountain by creating in illusion of movement, as you can see, by the depiction of multiple arms.

Siva and Parvati have not been shown in the picture.

13. B. Vishnu's Avatar, Vamana, Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

According to Hindu mythology, there are ten *avatars* (incarnations) of Vishnu popularly known as *Dasavatar.* The ten incarnations are *Matsya* (Fish), *Kurma* (Tortoise), *Varaha* (Boar), *Narasimha* (half-lion half-man), *Vamana* (Dwarf), Parasuram, Rama, Krishna, Buddha and the tenth, *Kalki* seated on a horse, is yet to appear.

In the picture, one sees the fifth incarnation of Vishnu, i.e. *Vamana.* He is also known as *Trivikrama* as he covered the whole universe or *triloka* i.e. earth, heaven and the netherworld in three strides.

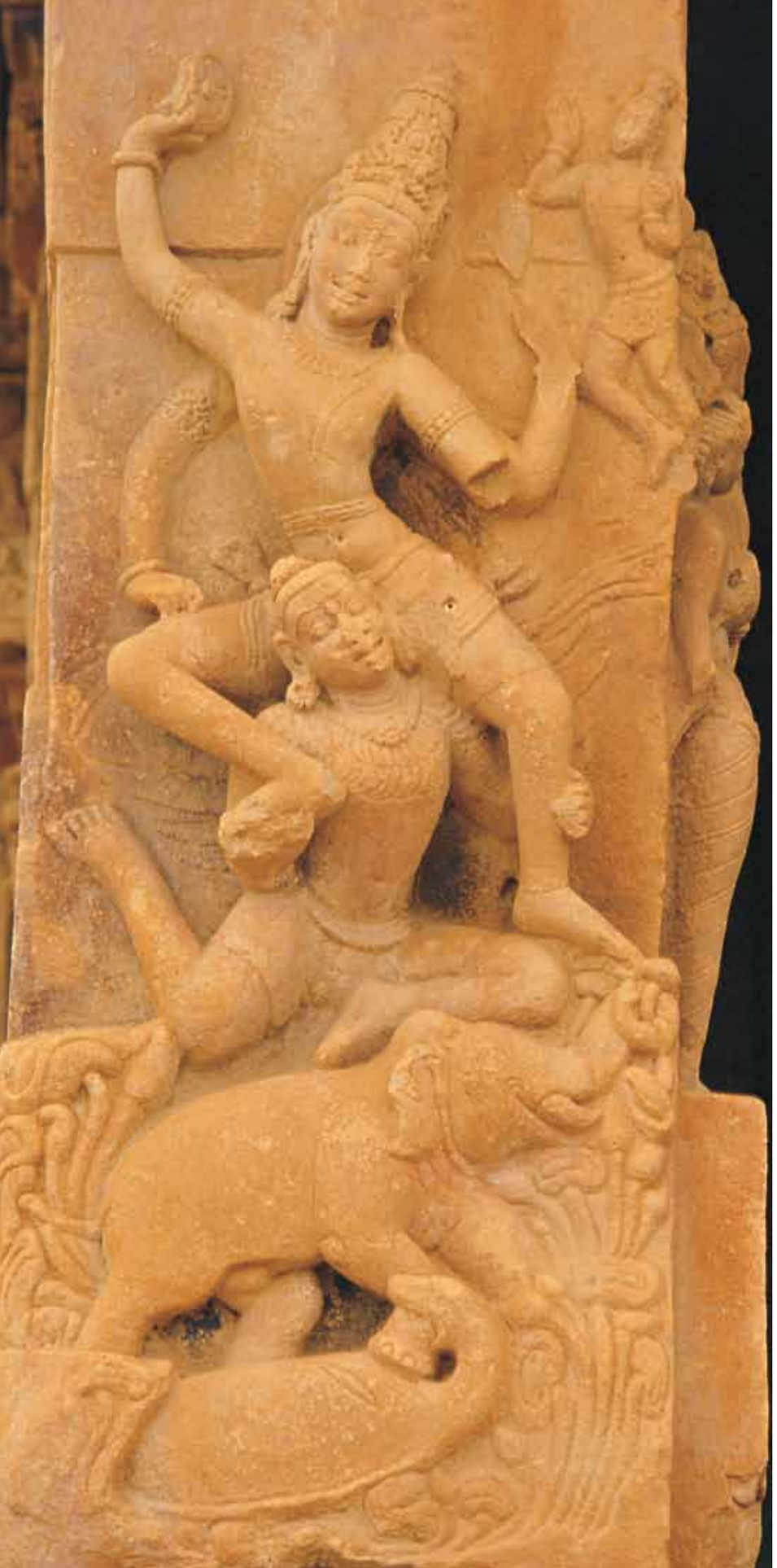

14. क. गजेन्द्रमोक्ष, विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

जीवन के महत्वपूर्ण आदर्श के एक भाग के रूप में भारत के पशुओं का गहन अध्ययन किया गया, उन्हें सँजोकर रखा गया और उनका प्रतीक रूप में प्रस्तुतीकरण भी किया गया।

अक्सर विष्णु भगवान् को महान सूर्य गरुड़ पर अवस्थित दिखाया जाता है, जो बुराई का नाश करने वाला और साहस का मूर्त रूप है। गरुड़ पर ही सवार होकर विष्णु भगवान् गजराज गजेन्द्र को मगर रूपी दानव के चंगुल से मुक्त करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए। इस मगरमच्छ दानव ने गजेन्द्र को झील के गहरे पानी में काफी समय तक रोक रखा था।

गजराज ने तब विष्णु भगवान से प्रार्थना की और विष्णु भगवान् सहानुभूतिपूर्वक अवतरित हुए तथा उन्होंने मगर को मार गजेन्द्र को मुक्त किया। प्रथम चित्र में इसी प्रसंग का वर्णन है।

14. ख. तक्षित-स्तंभ, विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

पट्टदकल के विरुपाक्ष मंदिर की स्तंभ प्रतिमाओं की एक खास विशेषता महाकाव्यों और अन्य पौराणिक आख्यानों तथा उपाख्यानों की कथाओं का पत्थरों में वर्णनमय चित्रलेखन है। कुछ स्तंभों में एक कथा से उपकथाएँ चित्रित हैं, जबकि अन्यों में विषयों के प्रकार, कमतर उभरी नक्काशी में श्रेष्ठ कोमलता और शुद्धता के साथ उभारे गए हैं। यह शैली भरहुत और साँची में देखी जाने वाली मूर्तियों के फैलाव का निरूपण करती है। इसी स्तम्भ में, आप वर्णनात्मक मूर्तियों को नर्तकियों के रूप में भी देख पाते हैं।

14. A. Gajendra Moksha, Virupaksha Temple, Pattadakal, Karnataka

Animals in India were closely studied, cherished and regarded symbolically, as part of life.

Vishnu is often seated on the great sun eagle Garuda, pursuer of evil and the embodiment of courage. It was also on Garuda that Vishnu descended to earth to free the elephant king, Gajendra, from the clutches of a crocodile demon who had dragged Gajendra into the deep waters of a lake. The elephant king prayed to Vishnu who compassionately appeared and freed Gajendra after killing the crocodile.

14. B. Sculpted Column, Virupaksha Temple, Pattadakal

A distinctive feature of column sculptures of the Virupaksha temple at Pattadakal is the depiction of stories from epics and other myths and legends. In some columns, episodes from one story have been illustrated, whereas in others, a variety of themes are caved out with great delicacy and precision in low relief. The style is considered as an extension of the sculptures seen at Bharhut and Sanchi. In this column you also see narrative sculptures as also couples and dancers.

15. संगमेश्वर मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

साधारणत: पट्टदकल के दस मंदिरों को महत्वपूर्ण माना जाता है। इन दस मंदिरों में नागर शैली के पापनाथ, जंबूलिंग, कदासिद्धेश्वर एवं काशी विश्वनाथ मंदिर हैं तो द्रविड़ शैली के विरूपाक्ष, मल्लिकार्जुन, संगमेश्वर तथा गलगनाथ के मंदिर भी हैं।

आठवीं शताब्दी के प्रारब्ध में विजयादित्य ने संगमेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। उन्हें यहाँ विजयेश्वर के नाम से जाना जाता है। ऐसा विश्वास है कि किन्हीं अज्ञात कारणोंवश, इस मंदिर के विभिन्न भाग एवं उत्कीर्ण विशालकाय मूर्तियां होने के बावजूद इसका निर्माण कार्य पूरा न हो सका।

मंदिर के मुख्य पूजा-स्थल के चारों तरफ प्रदक्षिणा के लिए स्थान तथा दो उप पूजा-स्थलों के साथ-साथ चार स्तंभों वाला एक कक्ष भी है। आज यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि यह कक्ष बाद में स्थापित किया गया था। केवल मुख्य पूजा-स्थल एवं मुख्य भवन मूल है। मंदिर के अधिष्ठान धरातल पर पौराणिक पशुओं की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। इस मंदिर के पत्थर-निर्मित तथा छिद्रयुक्त झरोखों की विरूपाक्ष तथा मल्लिकार्जुन के मंदिरों में नकल सी की गई है। इस मंदिर में उत्कीर्ण एक लेख में इसके मूर्तिकार 'पक' के नाम का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने इसके दो स्तंभों की रूपरेखा बनाई थी।

15. Sangamesvara Temple, Pattadakal, Karnataka

At Pattadakal, ten temples are generally considered important. These are Papanatha, Jambulinga, Kadasiddesvara and Kasi Visvesvara temples of the *Nagara* style and Virupaksha, Mallikarjuna, Sangamesvara, Galagnatha temples representing the *Dravida* style of temples.

The Sangamesvara temple was built by Vijayaditya at the beginning of the eighth century A.D. The temple is dedicated to Lord Siva, who is known as Vijayesvara in this temple. The temple remained unfinished for some unknown reasons despite several building phases. The temple has massive carved sculptures. The main shrine of the temple is surrounded by an ambulatory, two secondary shrines and a columned hall. It has been established that this columned hall is a later addition. The sanctuary and superstructure, however, are original. The moulded base of the temple has carvings of mythical animals. Its perforated stone windows were closely copied in the succeeding Virupaksha and Mallikarjuna temples at the site. In an inscription at the temple, one finds the name of the sculptor 'Paka' who designed two of the many columns of the temple.

16. पापनाथ मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

पापनाथ मंदिर, उत्कीर्णनों के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर की दीवारों, स्तंभों और ड्योढ़ियों पर प्रचुर आकृतियाँ उत्कीर्णित हैं, जिनके अध्ययन के लिए सम्पूर्ण जीवन चाहिए। इस मंदिर में हमें नागर और द्रविड़–दो वास्तुकला शैलियां प्राप्त होती हैं। शिखर या सूची स्तंभीय (पिरामिडनुमा) मीनार, नागर शैली में वक्र आकार लिए है, जबकि द्रविड़ शैली में शिखर अधिक वर्ग के आकार वाली छतों की श्रृंखलाओं द्वारा ऊपर उठते-उठते आकार में घटता जाता है। परिसर के दक्षिण में स्थित पापनाथ मंदिर में ये दोनों ही तत्व कुछ सीमा तक एकीकृत हो जाते हैं। पापनाथ मंदिर की मीनार–संरचना, इसी क्षेत्र में स्थित कदासिद्धेश्वर और जम्बूलिंग मंदिरों की मीनारों के समान है।

यह मंदिर अठारहवीं शताब्दी के प्रथम पूर्वार्द्ध मे निर्मित हुआ। इसमें दो मंडप हैं, अत: तीर्थ मंदिर से पहले विशाल सभागृह बने हुए हैं।

कुछ स्थानों पर छिद्रित पाषाण निर्मित खिड़कियां, शिल्पयुक्त फलकों के बाजू में बनी हुई हैं।

16. Papanatha Temple, Pattadakal, Karnataka

The Papanatha temple is renowned for its carvings. Innumerable figures spill out lavishly on walls, pillars and porches, a profusion of images which would need a life time to study. The two styles of temples - *nagara* and *dravida* are found in this temple. The *shikhara* or pyramidal tower is curved in the *nagara* style, whereas in the *dravida* style, the *shikhara* is more square, rising in a series of terraces diminishing in size. Both these elements fuse to a certain extent in the Papanatha Temple, located to the south of the complex. The tower structure of Papanatha Temple is similar to the towers of Kadasiddesvara and Jambulinga temples at the same site.

The temple was built during the first half of the eighth century and has two *mandapas* and hence, the temple shrine is preceded by the halls of increasingly large scale.

The pierced stone windows flank the sculpture panels at many places.

17. बाह्य दीवार, पापनाथ मंदिर, पट्टदकल, कर्नाटक

पापनाथ मंदिर की बाह्य दीवार, अग्रभाग में स्थित ड्योढ़ी तथा पूर्व और पश्चिम में फैले, दक्षिणी ओर से आरंभ होते हुए महान हिन्दू महाकाव्यों–रामायण तथा महाभारत–के कुछ शानदार दृश्य हैं। ये झांकियां विस्तृत और अलंकृत हैं। रामायण की कथा राजा दशरथ द्वारा किए गए यज्ञ तथा अपनी पत्नी कौशल्या को खीर प्रदान करने के प्रकरण से आरंभ होती है, ताकि वे पुत्रवती हो सकें और इस कथा का चरम बिन्दु लंका में हुई लड़ाई है, जिसमें वानरों की सहायता से निर्मित पुल का वर्णन तथा रावण की सेनाओं की पराजय और राम तथा वानरराज सुग्रीव के राजतिलक की कथा है। इसी प्रकार महाभारत की कथा, अपने चरम बिन्दु पर पहुँच कर पांडवों की जीत तथा अर्जुन के वीर के रूप में चित्रांकन से समाप्त होती है।

भक्तगण इस मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाते या परिक्रमा करते समय इन महाकाव्यों का प्रस्तुतीकरण देख सकते हैं।

17. Exterior Wall, Papanatha Temple, Pattadakal, Karnataka

In the Papanatha Temple, running around the outer walls and also on the columns on the front porch and spread east and west, beginning on the southern side are glorious scenes from the great Hindu epics, the Ramayana and the Mahabharata. The tableaux are detailed and elaborate. The Ramayana starts with the sacrifice by King Dasaratha and the giving of the *Payasa* to his wife Kausalya so that she may bear sons, and culminates in the battle of Lanka with a striking episode of the bridge that the monkeys helped build, the defeat of Ravana's forces and the coronations of Rama and the monkey king Sugriva. Likewise, the Mahabharata culminates in the victory of the Pandavas and the portrayal of Arjuna, as a hero.

Thus the devotee while making his way around the temple would see the complete unfolding of the epics.

18. विरूपाक्ष मंदिर, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

कर्नाटक के बेल्लारी जिले की तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर हम्पी स्थित है। हम्पी का इतिहास नवप्रस्तर-युग, साथ-ही-साथ चालुक्य, चोल और पाण्ड्य वंश से भी जुड़ा हुआ है। यहां पर 1636 ईसा पश्चात् दो भाइयों हरिहर और बुक्का, जिन्हें हुक्का और बुक्का के नाम से जाना जाता था, ने विजय की नगरी–विजयनगर की खोज की। हालाँकि, विजयनगर का सर्वाधिक शक्तिशाली, लोकप्रिय और विशिष्ट राजा–कृष्णदेव राय था, जिसने 1501 से 1530 ईसा प. तक शासन किया। वह एक कवि था और कला, वास्तुकला, नृत्य और संगीत का महान पारखी था।

शताब्दियों से विरूपाक्ष मंदिर को हम्पी के मंदिरों में सर्वाधिक पवित्र माना जाता रहा है। इस मंदिर को पंपापति मंदिर भी कहा जाता है। पंपापति अर्थात् पंपा का भगवान, ब्रह्मा की पुत्री अथवा पंपा–तीर्थ का भगवान। तुंगभद्रा नदी को स्थानीय रूप से पंपानदी कहा जाता है। यह मंदिर हेमकुण्ट की पहाड़ी के उत्तर में, तुंगभद्रा के दक्षिणी तट पर चित्रोपम भू-दृश्य के बीच अवस्थित है। यह मंदिर, विजयनगर वास्तुकला शैली पर आधारित है और इसमें दो विशाल प्रांगण हैं, पहले में उत्तुंग उचित अनुपात में बावन मीटर ऊंचा, नौ मंज़िला पूर्व गोपुरम् (आन्तरिक चित्र) तथा कई उप-तीर्थ मंदिर और बड़ी संख्या में मंडप हैं। मंदिर के गर्भगृह में विरूपाक्ष (शिव, सबके नाथ) स्थापित हैं और यहा आज भी पूजा होती है। प्रति वर्ष अप्रैल माह में पूर्णिमा के दिन तीर्थयात्री यहाँ विशेष दर्शन तथा उत्सव हेतु एकत्रित होते हैं।

मंडपों, तीर्थ मंदिरों और मंदिर के अन्य भागों-विशेषकर छत आदि को पूर्ण रूप से शायद रंग दिया गया था। इस मंदिर में विविध आकारों की विशाल रचनाएं मंडपों की छतों पर भी देखी जा सकती हैं।

18. Virupaksha Temple, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

Hampi is situated on the southern bank of the Tungabhadra river in Bellary district of Karnataka. The hisory of Hampi is associated with the Neolithic age and subsequently with the various Chalukyas, the Cholas and the Pandyas. Here, Vijayanagar, the city of victory was founded by the two brothers Harihara and Bukka, popularly known as Hukka and Bukka, in 1336 A.D. However, the most powerful, popular and distinguished king of Vijayanagar was Krishnadeva Raya who ruled from 1509 to 1530 A.D. He was a poet and a great patron of art, architecture, dance and music.

The Virupaksha temple has been considered, throughout the centuries, to be the most sacred in Hampi. The temple is also referred to as the Pampapati temple. Pampapati means either the Lord of Pampa, the daughter of Brahma or the Lord of Pampa-*tirtha.* The Tungabhadra river is locally known as the Pampanadi. The temple is located in the picturesque surrounding on the southern bank of the Tungabhadra, immediately to the north of the Hemakunta Hill. The temple follows the Vijayanagar architecture and has two large courtyards, the first with the lofty well proportioned fifty-two metres high nine storeyed east *gopura* (inset) and the second with many sub-shrines and a large number of *mandapas.*

The sanctum of the temple enshrines the Virupaksha (Siva, the Lord of all) *lingam* and is still used for worship. Every year on the full moon in the month of April, pilgrims assemble for special darshan and the festival.

The *mandapas,* shrines and other parts of the temple, especially the ceiling were probably painted throughout. A large composition on the ceilings of the *mandapas* can be seen in this temple.

19. कृष्ण मंदिर, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

कृष्ण मंदिर, हेमकुण्ट की पहाड़ी तथा तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित है। शिलालेख के अनुसार, इस मंदिर को कृष्णदेव राय ने निर्मित कराया और उन्होंने उड़ीसा-स्थित उदयगिरि के मंदिर से बाल-कृष्ण की मूर्ति लाकर इस मंदिर के मंडप में स्थापित की।

मंदिर में पूर्वमुखी गोपुरम् से प्रवेश किया जाता है। यह मंदिर कृष्ण को समर्पित हे। इस प्रवेश मार्ग से होकर दर्शक एक विशाल खुले प्रांगण में पहुंचते हैं, जिसके केन्द्र में मंदिर बना हुआ है। मंदिर के प्रमुख समूह में एक खुला महामंडप, एक अर्ध-मंडप और गर्भगृह तथा अंतराल के आसपास बना आच्छादित प्रकर सम्मिलित हैं। अर्ध-मंडप में स्थित स्तंभों में से एक स्तंभ पर विष्णु के दशावतार निदर्शित हैं।

मंदिर के तीन प्रवेश मार्ग या गोपुरम् हैं और यह मंदिर कृष्ण-कथा के साथ जुड़ी हुई विषय-वस्तु के अति विशिष्ट प्रस्तुतीकरण के लिए प्रसिद्ध है। अनेक तीर्थ मंदिरों में से एक सुब्रह्मण्य को समर्पित है, जो शायद कृष्ण मंदिर में अपने ही प्रकार का विशिष्ट मंदिर है।

19. Krishna Temple, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

The Krishna temple is situated to the south of the Tungabhadra river and the Hemkunta hill. According to an inscription the temple was built by Krishnadeva Raya who brought an image of Bal-Krishna from a temple in Udaigiri in Orissa and enshrined it in the *mandapa* of the temple.

The temple is entered through a *gopuram* facing east and is dedicated to Krishna. The entrance leads the visitor into a spacious open courtyard at the centre of which stands the temple. The main sanctum group comprises of usual arrangement of an open *maha-mandapa,* an *ardha-mandapa* and a covered *prakara* running around the *garbha-griha* and *antarala.* In the *ardha-mandapa,* one of the pillars shows the ten incarnations of Vishnu.

The temple has three gateways or *gopurams* and is famous for its very characteristic display of themes related to the story of Krishna. One of the many shrines is dedicated to Subramanya which is rather unique in a Krishna temple.

20. रथ, विट्ठल मंदिर, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

पूर्व की ओर प्रमुख मंदिर के आगे, विट्ठल मंदिर के अहाते में पूर्ण रूप से पाषाण उत्कीर्णित रथ है। यह पाषाणरथ शायद ही कभी दर्शक को आकर्षित करने में चूकता होगा। इसे दक्षिण भारत की देवियों की शोभायात्रा में उत्सवमूर्तियों से युक्त लकड़ी की गाड़ियों के नमूने के आधार पर निर्मित किया गया है। इस रथ में गरुड़ाकृति है, जो गरुड़ तीर्थमंदिर की उद्देश्य-पूर्ति करती है, जिसे आमतौर पर वैष्णव मंदिरों में देखा जा सकता है। इस रथ के पहिए चलायमान होने के कारण प्रसिद्ध हैं। शुंडाकार, ईंटों से निर्मित विमानाकृति वाली अधिरचना अब नहीं है।

20. Ratha, Vitthala Temple, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

In the temple complex of the Vitthala temple, preceding the main temple on the east is a chariot carved completely of stone. This stone chariot seldom fails to attract the visitor and has been modelled after the wooden carts which carry *utsava-murtis,* images of deities in procession in south India. This *ratha* houses an image of Garuda and serves the purpose of a Garuda-shrine which is normally seen in Vaisnava temples. The wheels of the *ratha* are reputed to have movable parts. The towered brick superstructure, shaped like a *vimana,* is now lost.

21. आन्तरिक भाग, विट्ठल मंदिर, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

विजयनगर साम्राज्य शक्तिशाली और समृद्ध था। विजयनगर के राजाओं के संरक्षण में बहुत-से मंदिर बने, जिनमें से शायद विट्ठल मंदिर, सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा विजयनगर की वास्तुकला का श्रेष्ठ नमूना है। यह मंदिर तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है।

यह मंदिर पूर्वमुखी है और विट्ठल रूप में भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर-परिसर में एक खुला महा-मंडप, बाजू-ड्योढ़ियों सहित बंद अर्ध-मंडप: एक आच्छादित प्रदक्षिणा-प्रहर, जो अंतराल और गर्भगृह को घेरे हुए है। साथ ही, इसके चित्रात्मक नक्काशी सहित विस्तृत रूप से उत्कीर्ण अलंकृत स्तंभ और पृष्ठ भाग में निर्मित पशुओं के नमूने विजयनगर काल में प्रचलित शिल्प परंपराओं को उद्घाटित करते हैं। मंदिर में तीन गोपुरम् हैं, पर प्रमुख प्रवेश पूर्व की ओर स्थित प्रवेश मार्ग से है। यह लघु प्रवेश मार्ग निम्न स्तर पर ग्रेनाइट (कणाश्म) पत्थर से निर्मित है और इसकी अधिरचना ईंट से हुई है।

विजयनगर के स्तंभयुक्त मंडपों को, सामान्यतया, स्तंभों की सही संख्या की ओर ध्यान न देते हुए, ''सहस्र स्तंभ मंडप'' कहा जाता है। स्तंभों के बाह्य घेरे को संगीतात्मक स्तंभ भी कहा जाता है, क्योंकि जब इन्हें थपथपाया जाता है, तो ये प्रतिध्वनित होते हैं। विट्ठलमण्डप में छप्पन स्तम्भ हैं। प्रत्येक स्तम्भ प्रभावशाली संयुक्त-मूर्ति-इकाई के रूप में समृद्धतापूर्वक उत्कीर्ण है।

21. Interior, Vitthala Temple, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

The Vijayanagar empire was powerful and wealthy. Under the patronage of Vijayanagar kings, many temples were built of which perhaps the most important and finest of Vijayanagar architecture is Vitthala temple. The temple stands on the southern bank of Tungabhadra river.

The temple faces east and was dedicated to Vishnu as Vitthala. The temple complex contains the open *maha-mandapa,* a closed *ardha-mandapa* with side-porches, and a covered *pradak-shina prahara* enclosing the *antarala* and *garbha-griha.* In addition, its elaborately carved decorated pillars with figural carvings and rearing animal motifs show the trends in sculpture prevalent in the Vijayanagar period. The temple has three *gopurams* but the main entrance is through the gateway on the east. This small gateway is built of granite on the lower level and has a brick super structure.

The pillared *mandapas* of Vijayanagar are generally referred to as “thousand-pillared *manda-pas”* regardless of the exact number of pillars. The outer ring of pillars are also known as the musical pillars as these reverberate when tapped. The *mandapa* of Vitthala has fifty-six pillars. Each pillar is richly carved as a massive composite sculptural unit.

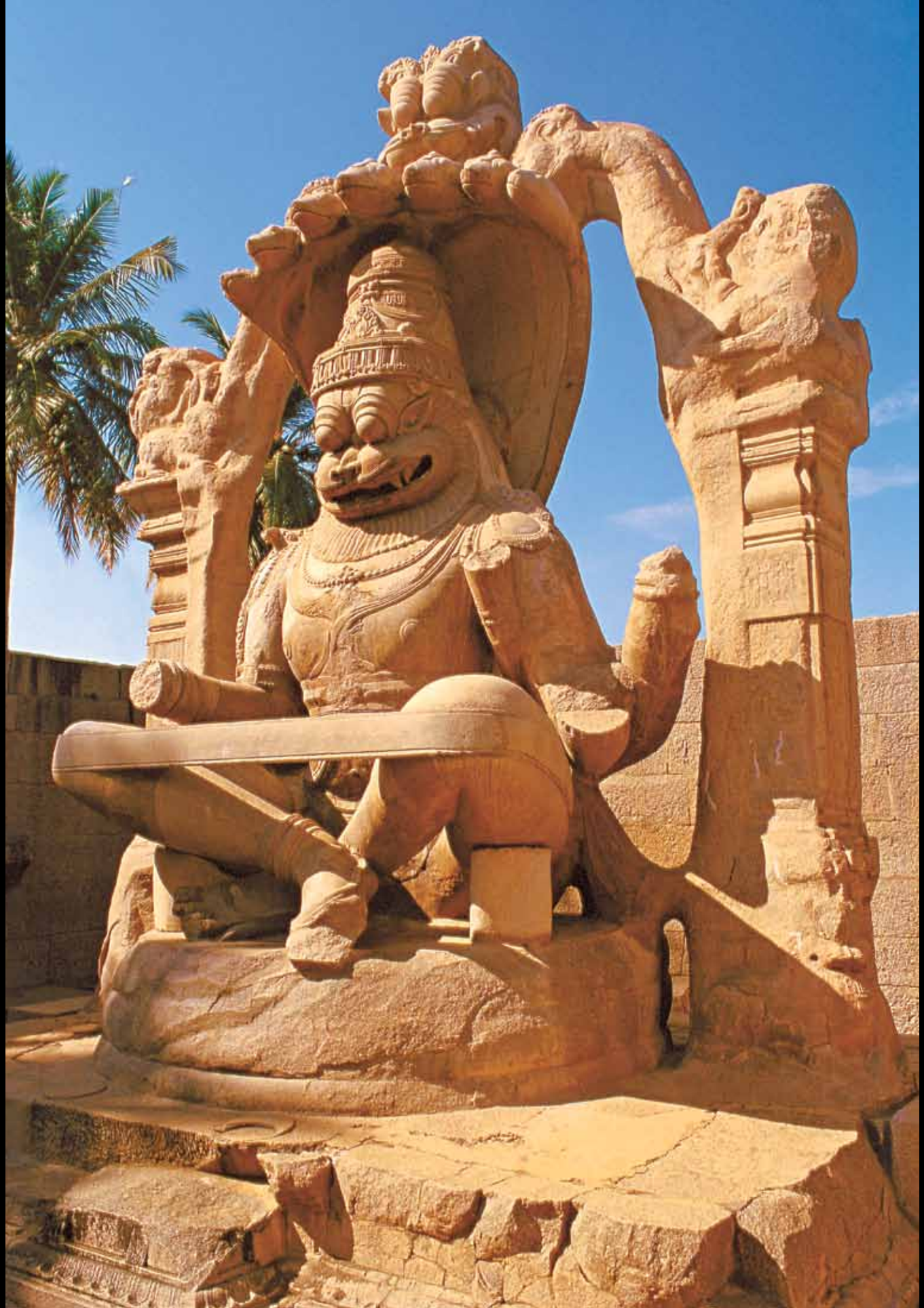

22. नरसिंह, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

दक्षिण व उत्तरी शैलियों की तुलना में विजयनगर के कलाकारों ने अपने मंदिरों में ज्यादा उभार वाली उत्कीर्ण कला का प्रयोग बहुत ही कम किया है। विजयनगरीय विशेष मूर्ति शैली में राज्य के विभिन्न भागों में विशाल एकाश्म उत्कीर्ण-शिल्प मिलते हैं। लेपाक्षी मंदिर के उत्तर-पूर्वी हिस्से में विशाल नंदी तथा गणेशजी-समर्पित मंदिर में गणेशजी की विशाल आकृति उस युग के सुंदर कला-नमूने हैं। संभवत: इनसे भी ज्यादा भव्य तो विजयनगर में बैठे हुए उग्र नरसिंह का मूर्ति-शिल्प है। यह साढ़े छ: मीटर ऊँचा है तथा कृष्णदेव राय के शासनकाल में सन् 1528 में निर्मित किया गया था।

एक प्रकार से यह विशाल आकृति मानवीय भक्तों के सम्मुख विशालकाय लगती है। ऐसी धारणा है कि मूलत: नरसिंह देवता की गोद में बैठी लक्ष्मी की आकृति भी थी।

यह चारदीवारी से घिरे स्थान में स्थित है एवं पूर्वाभिमुखी है। इसके ऊपर सात फन वाले शेषनाग के सिर को भी देखा जा सकता है। यद्यपि यह मूर्तिशिल्प काफी क्षतिग्रस्त हो गया था, पर पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसका पुनरुद्धार कर दिया गया है।

22. Narasimha, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

In comparison to many Deccan and Northern schools, the sculptors of Vijayanagar used carvings sparingly on their temples. A very distinguished style of sculptures of the Vijayanagar period are many large monolith carvings found at various sites of the kingdom. A large reclining Nandi located some distance to the northeast of the Lepakshi temple and a huge image of Ganesa enshrined as the main deity in a temple dedicated to him are fine examples of the period.

Even more impressive, perhaps, is a grand representation of a seated *Ugra* Narasimha or "Angry Narasimha" at Vijayanagar. The sculpture is six and a half metres in height and was dedicated in 1525 A.D. during the reign of Krishnadeva Raya. This huge sculpture literally dwarfs its human worshippers.

It is believed that a figure of Lakshmi was originally seated upon the deity's lap.

It is set within a walled enclosure facing east and a seven headed snake above the head can be seen.

The sculpture was badly damaged but has been repaired by the Archaeological Survey of India.

23. रामायण का आधारभूत उभार, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

दो हजार वर्षों से भी अधिक समय से राम की आनन्ददायक कथा ने अनपढ़ किसान से लेकर बहुश्रुत विद्वानों तक–लाखों लोगों–को आकर्षित किया है। रामायण की महान लोकप्रियता को देखते हुए, कारीगरों ने सामान्यतया भारत के प्राचीन मंदिरों में महाकाव्य के दृश्यों को शिल्प-रूप में प्रस्तुत किया।

छोटा होने पर भी, अति अलंकृत, पूर्वमुखी हज़ारा राम मंदिर अपने अनेक उत्कृष्ट आधारभूत उभार वाले मूर्ति-शिल्पों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें रामायण के दृश्यों को निदर्शित किया गया है। मूलत: यह मंदिर भगवान विष्णु के दस अवतारों में से एक, रामचन्द्र को समर्पित था, पर वर्तमान में परम पावन मंदिर गर्भगृह खाली है और इस मंदिर का प्रयोग नहीं किया जाता। इस मंदिर में आधारभूत उभार वाले शिल्प-रूप में, रामायण की कथा के अनेक प्रसंगों में से चार प्रसंगों को निदर्शित किया गया है (दक्षिणावर्त); स्वर्ण मृग सहित राम और सीता, सीता को रावण द्वारा हर कर ले जाते समय मिथकीय पक्षी जटायु के साथ रावण की लड़ाई, अशोक वाटिका में हनुमान द्वारा सीता को अंगूठी देना और राम द्वारा रावण का वध।

मंदिर का नाम ''सहस्र राम वाले मंदिर'' को निर्दिष्ट करता है, क्योंकि इसकी दीवारों पर असंख्य उभारयुक्त शिल्प हैं, पर मंदिर ने वास्तव में एक महल मंदिर के उद्देश्यों की पूर्ति की। इस मंदिर का महल के अहातों में प्रवेश करने हेतु भी प्रयोग किया जाता था।

23. Ramayana Bas-Relief, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

For over two thousand years, the exhilarating story of Rama has fascinated millions from the illiterate peasant to the erudite scholar. Considering the great popularity of Ramayana, artisans generally sculpted scenes from the epic in the ancient temples of India.

A small but highly ornamented, east facing Hazara Rama temple is famous for its many fine bas-relief sculptures depicting scenes from the Ramayana. The temple was originally dedicated to Ramachandra, one of the ten incarnations of Lord Vishnu but at present the sanctum-sanctorum is empty and the temple is not in use. Four episodes among many of Ramayana bas-reliefs in the temple are shown here (clockwise); Ram and Sita with the Golden deer, fight of Ravana with Jatayu, the mythical bird, while abducting Sita, Hanuman giving a ring to Sita in Ashoka Vatika and killing of Ravana by Rama.

The name of the temple denotes 'the temple of the thousand Ramas' because of the numerous bas-reliefs on its walls but the temple actually served the purposes of the palace temple and also the entrance to the palace enclosures.

24. हाथी-खाना, विजयनगर, हम्पी, कर्नाटक

सामान्यतया, लंबे, सुन्दर समकोणात्मक पश्चिममुखी संरचना को हाथी-खाना की संज्ञा दी जाती है। इसमें ऊंची गुम्बदयुक्त छतों सहित भारत-इस्लामी वास्तुकला शैली में निर्मित ग्यारह विशाल हाथी-खाने हैं। ये गुम्बद विभिन्न आकारों के हैं, जैसे–गोल अष्टभुजाकार या मेहराबदार। हाथी-खानों की गुम्बदयुक्त छतों पर कमल के फूल के नमूने बने हुए हैं। इसके बाह्य तथा आन्तरिक भाग में किए गए गचकारी तथा पलस्तर की सजावट समृद्ध अलंकरण का आभास देते हैं।

यह इमारत जनाना-अहाते के पूर्व-पूर्वोत्तर भाग में स्थित हैं। हालाँकि, इस संरचना को हाथी-खाने की संज्ञा देने के विषय में विवाद है।

24. Elephants' Stable, Vijayanagar, Hampi, Karnataka

A long, beautiful rectangular west facing structure is generally identified as the Elephants' stable. It contains eleven large-stables, in Indo-Islamic architectural style with lofty domed roofs. The domes are of different types—round, octagonal or vaulted. There are lotus motifs on the dome ceilings of the stables. The remains of the stucco and plaster ornamentation on its exterior and interior gives an idea of its rich decoration.

The building is situated to the east-northeast of the *Zanana* enclosure. Lately though, there is a controversy about the name of the structure.